ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

नवम्बर 2017

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

श्रीमती सन्तोष कुमारी कथूरिया, पूज्या माता श्रीमती कृष्णा झाम और पुत्रवधू श्रीमती ज्योति झाम से आशीर्वाद लेते हुए श्री विक्रमदेव शास्त्री

चित्र में बाएं से श्रीमती सन्तोष कुमारी कथूरिया, पूज्या माता श्रीमती कृष्णा झाम और पुत्रवधू श्रीमती ज्योति झाम को स्मृति चिन्ह एवम् स्मारिका देकर सम्मानित करते हुए श्री विक्रम देव शास्त्री, नैष्ठिक, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ और साथ में आशीर्वाद लेते हुए।

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

कार्तिक-मार्गशीर्ष सम्वत् 2074 नवम्बर 2017

सृष्टि सं. 1972949118 दयानन्दाब्द 193

वर्ष-16) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-11

(वर्ष 47 अंक 11)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195, 9728236507

❖

सह सम्पादकः

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाताः **गजानन्द आर्य**

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(08053403508)

❖

उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर .

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
समाचार	4
सोम प्रभु क्या-क्या देता है?	5
सर्वोत्तम मनुष्य की पहचान	6
ईश्वर और जीव का संबंध	8
कर्म-फल सिद्धान्त से सम्बन्धित बातें	12
महारानी द्रोपदी	14
संसार में सुख-शान्ति का एक मात्र उत्तम मार्ग चरित्र....	16
ऋग्वेद में पति-पत्नी का आपसी व्यवहार	18
नीम एक-गुण अनेक	22
बाल संदेश	23
त्याग व सेवा की मूरत/श्रद्धा	25
हंसो और हंसाओं/आर्य श्रेष्ठ पुरुष के गुण	26
आत्मविश्वास	27
सोमनाथ जी का पृथिवी से ऊपर रहना एक मिथ्या चमत्कार	28
आशा और सफलता	28
हरियाणा स्थापना दिवस की 51वीं वर्षगांठ	29
देवता स्वरूप भाई परमानन्द की 143वीं जयन्ती	29
मेरे पिता	29
समर्थ को भी है दोष गुसांई लोकोक्ति समर्थ को.....	30
सत्यार्थ प्रकाश का बार-बार अध्ययन जीवन.....	31
दान सूची	32

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

हर्षोउल्लास के साथ सम्पन्न हुआ मासिक सत्संग

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर का मासिक सत्संग माननीय स्वामी धर्ममुनि जी की अध्यक्षता में रविवार 8 अक्टूबर 2017को सम्पन्न हुआ। सत्संग में मुख्य वक्ता श्री चांद सिंह आर्य, उमेद सिंह आर्य खुंडन, रवि शास्त्री आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, वकील जयनारायण व सुनील आर्य रहे। आश्रम के ब्र. नरेन्द्र ने दो सुन्दर भजन सुनाये जिसकी सभी ने प्रशंसा की। आश्रम के प्रबंधक व संचालक स्वामी सच्चिदानन्द जी ने उपस्थित सभी आर्यजनों का आभार व्यक्त किया और कहा कि वर्तमान समय में अच्छे साधुओं की बड़ी आवश्यकता है और भरसक प्रयत्न रहेगा कि ऋषि दयानन्द के कार्य को आगे बढ़ाया जायेगा। इस अवसर पर टिकरी कलां से चौ. करतार सिंह आर्य व धर्मवीर आर्य भी उपस्थित थे। सत्संग से पहले यज्ञ का आयोजन भी किया गया और यजमान को स्वामी जी द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया गया। कार्यक्रम के अंत में अगले सत्संग 11 नवम्बर 2017 की सुचना, प्रदान करने के साथ-साथ स्वामी धर्ममुनि जी ने सभी का धन्यवाद किया। नैष्ठिक ब्र. विक्रम देव शास्त्री द्वारा सभी के लिए मधुर व स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था की गई थी। सुखपाल आर्य पाचक का भजन भी सभी ने सराहया। मंच का संचालन राजबीर आर्य ने किया। खुशी-खुशी सब आर्य जनों ने विदाई ली।

भजन

उसी की दुनिया में आकर, उसी को भूल जाते हैं।
जरा सा रूप-धन पाकर, मनुष्य क्यों फूले जाते है।।

1 मिली थी मनुष्य की काया, तू इसको पाकर गर्माया।
छोड़कर ईश्वर की भक्ति को, हो डांवाडोल जाते हैं।
उसी की दुनिया में आकर उसी को भूल जाते हैं।।

2 ओ बंदे तेरा तन मन, करो धर्म देश के अर्पण।
उन्हीं को मोक्ष मिलता है, जो वेद अनुकुल जाते हैं।
उसी की दुनिया में आकर उसी को भूल जाते हैं।।

3 तेरे पे ऋण दयानन्द का, भक्त जी और श्रद्धानन्द का।
वह जिनकी खातिर लूट बैठे, वही प्रतिकूल जाते हैं।
उसी की दुनिया में आकर, उसी को भूल जाते हैं।।

4 बनो तुम वेद के रक्षक, बनो तुम धर्म के पोषक।
यही मार्ग है वीरों का, सिंह शार्दूल जाते हैं।
उसी की दुनिया में आकर उसी को भूल जाते हैं।

5 कह रहा तुमको जौहरी सिंह, करो अब आर्य सत्संग।
सत्संग के जल में गोता ला, भक्तजन टूल जाते हैं।
उसी की दुनिया में आकर उसी को भूल जाते हैं।

कर्ण आर्य (आत्म शुद्धि आश्रम)

सोम प्रभु क्या-क्या देता है?

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं, सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति।
सादन्यं विदथ्यं सभेयं, पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै॥

ऋग् 1.91.20

ऋषि: **गौतमः रहूगणः**। देवता **सोमः**। छन्द: **त्रिष्टुप्।**

(यः) जो **(अस्मै)** इस (सोम) को **(ददाशत्)** आत्म-समर्पण करता है **(उसे) (सोमः)** ऐश्वर्यशाली सोम प्रभु **(धेनुं)** धेनु **(ददाति)** प्रदान करता है, **(सोमः)** सोम प्रभु **(आशुं)** शीघ्रगामी **(अर्वन्तं)** अश्व (प्रदान करता है), **(सोमः)** सोम प्रभु **(कर्मण्यं)** कर्मण्य, **(सादन्यं)** ब्रह्मचर्य आदि आश्रमों के निर्वाह में सफल, **(विदथ्यं)** यज्ञ-कुशल, युद्ध-कुशल **(सभेयं)** सभ्य, संसत्-सदस्य तथा **(पितृश्रवणं)** पितृ-कुल की कीर्ति फैलानेवाला **(वीरं)** वीर-पुत्र (प्रदान करता है)।

'सोम' प्रभु के पास अनन्त ऐश्वर्यो का भण्डार भरा है। वह आध्यात्मिक ऐश्वर्यो का भी स्वामी है और आधिभौतिक ऐश्वर्यो का भी कुबेर है। इनका वह खुले हाथों सत्पात्रों में दान कर रहा है। परंतु उसके ऐश्वर्यो के दान का अधिकारी बनने के लिए पहले स्वयं दान करना पड़ता है। यह है आत्म-दान अथवा सर्वभाव से आत्म-समर्पण। जो 'सोम' प्रभु को आत्म-समर्पण कर देता है, उसे अपनी चिंता स्वयं नहीं करनी पड़ती, 'सोम' प्रभु उसके योग-क्षेम का उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लेते हैं। आत्म-समर्पक तो बस प्रभु की प्रेरणानुसार कर्म करता चलता है, फल वह प्रभु पर छोड़ देता है। आत्म समर्पण की निशानी यह है कि फल-प्राप्ति हो या न हो, जल्दी हो या विलंब से हो, वह उद्विग्न नहीं होता। 'कर्म करना मेरा काम है और फल देना प्रभु का काम' यह उसकी भावना हो जाती है। पर 'सोम' प्रभु अपने उत्तरदायित्व का पूर्णतः निर्वाह करते हैं। वे अपने पुजारी को अपार ऐश्वर्य का स्वामी बना देते हैं। वे उसे 'धेनु' प्रदान करते हैं। 'धेनु' से दुधारू गाय तो गृहीत होती ही है, परन्तु उसके अतिरिक्त 'धेनु' वाणी का भी नाम है। वाक्-शक्ति सचमुच कामधेनु है। व्यक्तवाक् होना मनुष्य की एक विशेषता है जो अन्य प्राणियों में नहीं है। वाणी ही शिष्य को अखिल ज्ञान-विज्ञानों से पूर्ण बनाती है। महर्षि सनत्कुमार ने कहा है कि ऋग्, यजुः, साम, अथर्व, पितृविद्या, राशिविद्या, निधिविद्या, देवविद्या, ब्रह्मविद्या, भूतविद्या, क्षत्रविद्या, नक्षत्रविद्या, धर्म-अधर्म, सत्य-अनृत, साधु-असाधु सब-कुछ वाणी से ही विशाल होता है। सोम प्रभु अपने भक्त को शीघ्रगामी अश्व प्रदान करते हैं। अश्व समस्त जीवनोपयोगी साधनों एवं प्राण-बल का प्रतीक है। सोम-प्रभु अपने आत्मदानी भक्त को ऐसा वीर-पुत्र प्रदान करते हैं, जो भाग्यवादी नहीं, अपितु कर्मण्य होता है, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास इन चारों सदनों का निर्वाहक होता है, यज्ञकुशल, आभ्यंतर एवं बाह्य संग्रामों में विजय पानेवाला, विभिन्न सभाओं संसदों में जानेवाला तथा पितृकुल की कीर्ति को फैलानेवाला होता है। भले ही वह एक होता है, पर गुणी होने के काण तारागणों में चन्द्र के समान चमकता है। आओ, हम भी 'सोम' प्रभु को आत्म-समर्पण क विविध ऐश्वर्यो को प्राप्त करें। -वेद मञ्जरी

गायत्री मन्त्र ही गुरु मन्त्र

गायत्री मन्त्र ही गुरु मन्त्र हो सकता है और कोई अन्य मन्त्र नहीं क्योंकि गुरु का अर्थगो=अन्धकार रू=दूर करने वाला। ये अन्धकार मनुष्य में कहाँ-कहाँ है? आँखों, कान, नाक, मुख, वाणी, जिह्वा आदि इन्द्रियों में। गो का अर्थ है इन्द्रिय और र का अर्थ है प्रकाश देने वाला इन्द्रियों में प्रकाश देने वाला। इन्द्रियाँ विषयों में जाकर मनुष्य का पतन कर देती है। गायत्री में गा का अर्थ इन्द्रियों को बल देने वाला और त्र का अर्थ है रक्षा करने वाला। इन्द्रियों में ये बल कौन देता है? इसलिए गायत्री मन्त्र को गुरु मन्त्र कहा जा सकता है।

- वीतराग महात्मा प्रभु आश्रित जी

सम्पादकीय

सर्वोत्तम मनुष्य की पहचान

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रति हन्यमानाः,
प्रारम्भ्य चोत्तजनाः न परित्यजन्ति॥

अर्थ-नीच (निम्न वर्ग के मनुष्य) विघ्न और भय से (भयभीत होकर) कार्य आरम्भ नहीं करते। मध्यम (वर्ग के मनुष्य) वे होते हैं जो कार्य आरम्भ (तो) करते हैं विघ्न-बाधा आने पर (वहीं अधुरा) छोड़ देते हैं। विघ्नों के बार-बार आहत किये जाने पर भी (अथवा विघ्न बाधाओं के बार-बार आने पर भी) उत्तम प्रकार के मनुष्य कार्य का परित्याग नहीं करते हैं। अर्थात् कार्य पूर्ण करके ही छोड़ते हैं।

प्रिय पाठक बन्धुओ। उपरोक्त श्लोक मध्य तीन प्रकार के मनुष्य बताये गये हैं। प्रथम वह होते हैं। जो किसी कार्य के बारे में सुनते हैं और विचार करते हैं। कहते हैं मैं इस कार्य को करूंगा परन्तु उनको जब उस कार्य के विषय में आने वाली विघ्न बाधाओं का ज्ञान होता है। तब भयभीत हो जाते हैं और आरम्भ ही नहीं करते मैदान छोड़कर यह कहकर भाग जाते हैं कि इतना कठिन कार्य हमसे नहीं होगा, इस प्रकार के मनुष्य जीवन भर हाथ पर हाथ धरे बैठें रहते हैं। कोई कार्य नहीं कर सकते, अन्यो के सहारे की प्रतीक्षा करते हैं। कोई मुझे सहयोगी मिले मेरा कार्य करवादे ऐसे व्यक्ति का जीवन व्यर्थ चला जाता है वह प्रथम वर्ग का घटिया है।

द्वितीय वह होते हैं जिनकी कार्य करने की इच्छा होती है, करना चाहते ही नहीं कार्य उत्साह के साथ करना आरम्भ भी कर देते हैं। परन्तु कार्य करने में विघ्न बाधाएं आती हैं तब निराश हताश हो जाते हैं यह जाने बिना ही कि मेरे ऐसे अधुरा कार्य छोड़ने का रिजल्ट परिणाम क्या होगा पीछे हट जाते हैं अधुरा छोड़ देते हैं पूरा नहीं करतें हैं वह द्वितीय श्रेणी के भीरू कायर होते हैं।

सर्वोतम तृतीय प्रकार के मनुष्य वह होते हैं जो कार्य आरम्भ करने से पूर्व ही अनेकों बार सोचते विचार करते हैं। किसी ने इस संबंध में बहुत सुन्दर कहा है-

बिना विचारे जो करे सो पीछे पश्चताए।
काम बिगारो आपनो जग में होत हसाए॥

विचारपूर्वक कार्य में आने वाली विघ्न बाधाओं को वह हटाने का सरल मार्ग खोज लेते हैं। वह कहते हैं।-

बाधाएं कब बांध सकी हैं आगे बढ़ने वालों को।
विपदाएं कब रोक सकी है गिर-गिर कर उठने वालों को॥

ऐसे उत्साह के साथ अपने कार्य को करते हुए विघ्नों के बार-बार आने पर भी निरन्तर आगे ही बढ़ते रहते हैं, कार्य समाप्त करके ही रूकते हैं। इस प्रकार के उत्तम मनुष्य के सफलता चरण चुमती है। मैं समझता हूं कि किसी उर्दू कवि ने ऐसे ही मनुष्य के लिए कहा है-

खुदी को कर बुलन्द इतना कि
हर तकदीर से पहले खुदा बन्दे से
खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है॥

प्रियवर! मैं अच्छी प्रकार समझता हूँ कि ऐसा बनना सरल नहीं है। ऐसा बनने के लिए आपको अपना मनोबल बढ़ाना होगा। संकल्प शक्ति दृढ़ करनी होगी। अब यहां प्रश्न उठता है कि यह होगा कैसे? मनुष्य जीवन भर योजनाएं बनाते रहते हैं। परन्तु करने के समय कुछ नहीं कर पाते, योजनाएं अधुरी रह जाती हैं। इसका मूल कारण है, थोड़ी सी आलोचना होते ही हम निराश हताश हो जाते हैं। ऐसे अवसर पर शान्त होकर चिंतन मनन करें। आजतक संसार में ऐसा कौन सा महापुरुष हुआ है जो अलोचना, निन्दा का शिकार न हुआ हो। श्री राम , श्री कृष्ण, महात्मा बुद्ध महर्षि दयानन्द, श्रद्धानन्द आदि आदि। महान् आत्माओं को कितने कष्ट दिये गये, आलोचना निंदा की गई। यह सभी दृढ़ संकल्प शक्ति के साथ आगे ही आगे बढ़ते रहे अपने लक्ष्य को प्राप्त किया, सफलता का ध्वज लहराया। आप भी उपरोक्त महापुरुषों से प्रेरणा लेकर अपने कार्य

में सफल हो सकते हैं। हमें मनुष्य जीवन के महत्व को समझना चाहिए कि इस पृथ्वी पर मनुष्य का जन्म लेना एक महत्वपूर्ण बात है। आप में इतनी शक्ति है कि यदि चाहे तो अपनी शक्तियों का विस्तार करके एक नया इतिहास रच सकते हैं। परन्तु आप तो निन्दा स्तुति आलोचना आदि के चक्कर में पड़कर पहले ही हार मानकर निराश हो जाते हैं। याद रखें जो मनुष्य स्वयं से हार जाता है। उसे दुसरे व्यक्ति सरलता से हरा सकते हैं। अत: उठो, जागो, सचेत सावधान होकर आगे बढ़ो, महापुरुषों के जीवन चरित्रों को पढ़ो, आपको प्रेरणा मिलेगी और सर्वोत्तम मनुष्य बन जाओगे। – **स्वामी धर्ममुनि जी**

सारा विश्व–एक परिवार

विनोबा की माता के पास पड़ोसिन अपना लड़का छोड़कर कुछ दिन के लिए तीर्थ यात्रा करने गई थी। विनोबा और पड़ोसी का लड़का समान स्नेह और सद्भाव के साथ एक ही घर में रहने लगे। माता के व्यवहार में विनोबा ने कुछ अन्तर पाया। पड़ोसी के लड़के को वे घी से चुपड़कर रोटी देती थी और विनोबा को रूखी। इस भेदभाव का कारण एक दिन माता से वे पूछ ही बैठे। माता ने स्नेह भरे शब्दों में कहा, 'बेटा, तू तो मेरा बच्चा है। पर दूसरा तो भगवान् का बच्चा है। अतिथि को भगवान् कहते हैं न? भगवान् के और अपने बच्चे में कुछ तो अंतर होना ही चाहिए।' माता की विशाल हृदयता पर विनोबा गद्गद हो गये।

शिक्षा-प्राणीमात्र से प्रेम करो। हृदय इतना विशाल बनाओ कि सब अपने दीखें, कोई पराया न लगे।

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

ईश्वर और जीव का संबंध

– गंगा शरण उपाध्याय

मुझमें और मेरी मेज में क्या भेद है? मेज एक निर्जीव पदार्थ है। इसको न गर्मी लगती है न सर्दी। मेज कुछ नहीं जानती। मुझे गर्मी और सर्दी दोनों लगती है।। मैं जानता भी हूँ। मेज के ऊपर पुस्तक रख दो या उस पर सोना लाद दो या उसके ऊपर कूड़े का ढेर लगा दो, मेज के लिए यह सब एक-सा है। मेज सोना देखकर प्रसन्न नहीं होती। कूड़ा देखकर रूष्ट नहीं होती। मैं मेज पर बैठकर लिखूँ या कोई मेरा शत्रु आकर लिखने लगे, उसे शोक, हर्ष, मोह, द्वेष आदि कुछ भी नहीं होता। परन्तु मेरा हाल ऐसा नहीं है। मेरे लिए सोना और कूड़ा एक नहीं। मेरे लिए मित्र और शत्रु एक नहीं। यह सुख-दु:ख और प्रेम तथा द्वेष ही प्रकट करते हैं कि मुझमें जीव है, या यों कहना चाहिए कि मैं जीव हूँ। मेज मे जीव नहीं। वह जीवरहित या निर्जीव है।

मुझमें हर्ष और शोक के साथ-साथ हर्ष को बढ़ाने तथा शोक को दूर करने की इच्छा भी पाई जाती है। मैं चाहता हूं कि मेरा दु:ख कम हो जाय। मैं यत्न करता हूँ कि मेरा सुख नित्यप्रति बढ़ता रहे। परन्तु मेरी मेज ऐसा नहीं करती। उसे सुख की वृद्धि से क्या प्रयोजन? उसे दु:ख की कमी से क्या मतलब? मेज जहां रखी हुई है वहीं पड़ी रहेगी। उसे चीरने के लिए बढ़ई यन्त्र लाता है। मेज चिल्लाती नहीं, न भागकर छिपने का उद्योग करती है।

संसार में कुछ वस्तुएं मेज की तुलना रखती हैं और कुछ मेरी। मिट्टी, ईट, पत्थर, पहाड़, नदी आदि मेज के तुल्य हैं। उनमें न सुख है न दु:ख, न इच्छा है न द्वेष, न ज्ञान है न प्रयत्न। कुछ मेरे समान हैं जैसे कुत्ता, बिल्ली, चील, कौआ, चींटी, साँप आदि। इनको मेरे समान ही सुख और दु:ख होता है। ये मेरे समान ही किसी से प्रेम करते हैं और किसी से घृणा। इनमें ज्ञान और प्रयत्न दोनों पाए जाते हैं। इसलिए हम मेज और उसके समान पदार्थो को जड़ या निर्जीव कहते हैं और मनुष्य, पशु, कीट, पतंगा आदि को चेतन या सजीव।

इन जड़ और चेतन से भी अलग एक और शक्ति है जो इन दोनों को वश में रखती है। यह नदियों को चलाती और पहाड़ों को बनाती है। इसी शक्ति के सहारे वायु चलती है, इसी का निकाला हुआ सूरज निकलता है, यही हमको सुख-दु:ख प्रदान करती है। इसी को हम ईश्वर या ब्रह्म नाम से पुकारते हैं।

अब देखना चाहिए कि ईश्वर किसके समान है? क्या ईश्वर मेज की भांति जड़ है या हमारे समान चेतन? एक बात तो स्पष्ट है अर्थात् ईश्वर मेज के समान जड़ नहीं। यदि ईश्वर जड़ होता तो मेज के समान क्रिया-रहित या ज्ञान-रहित होता। जिस प्रकार मेज कुछ काम नहीं कर सकती। उसी प्रकार ईश्वर भी कुछ न कर सकता। यदि उसमें ज्ञान न होता तो वह ठीक समय पर सूरज कैसे निकालता? यदि उसमें ज्ञान न होता तो वह बादल बरसाता? यदि उसमें ज्ञान न होता तो वह हमको सुख या दु:ख कैसे दे सकता? इसलिए ईश्वर में ज्ञान और प्रयत्न दोनों हैं। वह जानता भी है और करता भी है।

परन्तु एक बात में ईश्वर हमसे भिन्न है। जिस प्रकार हमको कभी सुख होता है और कभी दु:ख उसी प्रकार ईश्वर को सुख या दु:ख नहीं होता। जिस प्रकार हम किसी से मोह करते हैं और किसी से घृणा, उसी प्रकार ईश्वर नहीं करता। ईश्वर मेज के समान हर्ष और शोक तथा इच्छा और द्वेष से रहित है।

फिर भी यह नहीं समझना चाहिए कि ईश्वर मेज हो गया या मनुष्य हो गया। एक या दो धर्मो के समान होने से कोई वस्तुएं एक नहीं हो जाती। कपास सफेद होती है और बर्फ भी सफेद होती है, परन्तु सफेदी तो केवल एक ही गुण है। इसलिए इस एक गुण के समान होने से बर्फ और कपास एक नहीं। बर्फ ठण्डी है, कपास ठण्डी नहीं। इसी प्रकार ईश्वर मेज आदि जड़ पदार्थो से भी भिन्न है और मनुष्य आदि चेतन पदार्थो से भी भिन्न।

अब देखना चाहिए कि हमको सुख-दु:ख या इच्छा-द्वेष क्यों होता है? हम खाना खाते हैं। यदि खाना नहीं मिलता तो हमको दु:ख होता है, यदि मिल जाता है तो सुख। जो पुरुष भूख के समय हमको खाना लाने में सहायता करता है उससे हम स्नेह करते हैं,

और जो हमको खाने की प्राप्ति से रोकता है उससे द्वेष करते हैं। इसी प्रकार हमारी आँखें दुखने आ जाती हैं। हमको दुःख होता है। हम चिल्लाते हैं। हम इस दुःख को दूर करने का यत्न करते हैं, क्योंकि हम समझते हैं कि आँखें अच्छी हो जाएंगी तो हमको सुख होगा। परन्तु यदि कोई मनुष्य हमारी इस पीड़ा को बढ़ा देता है तो हम उससे द्वेष करते हैं। कहते हैं कि यह बुरा आदमी है। परन्तु यदि कोई भलामानस या डॉक्टर आकर हमारी इस आँख को अच्छा कर देता है तो हम उससे प्रेम करते हैं। इससे यह परिणाम निकलता है कि हम प्रयत्न तो कर सकते हैं, परन्तु संसार की समस्त सामग्री हमारे हाथ में नहीं है। हम संसार को अपने वश में तो करना चाहते हैं, परन्तु वश में कर नहीं सकते, इसलिए हमको सुख दुःख होता है। यदि हम जो चाहते सो कर सकते, यदि दुनिया की सभी वस्तुएँ हमारे कहे में होती, तो हम दुःख को अपने पास कभी न आने देते। जब हम चाहते तब पानी बरसाते और जब चाहते तो बादलों को दूर भगा सकते। परन्तु ऐसा नहीं है क्योंकि हमारी शक्ति थोड़ी है, हम परतन्त्र हैं।

मेज आदि जड़ पदार्थ भी परतन्त्र हैं। परन्तु हमारी परतन्त्रता और मेज की परतंत्रता में भेद है। मेज सर्वथा परतन्त्र है। उसे उठाकर रख दो, वहीं पड़ी रहती है। वह हिलडुल नहीं सकती। हम किसी अंश में स्वतन्त्र भी हैं। हम चाहें तो हाथ को उठावें और चाहें तो उसको नीचा कर लें। हम चाहें तो बात कहें और चाहें तो चुप रहें चाहें तो आँखों को खोलें और चाहें तो आंखें बंद कर लें। संसार के बहुत-से पदार्थ हमारे वश में हैं। हम उनको एक सीमा के भीतर बना या बिगाड़ सकते हैं। हम मेज को उठाकर इधर-उधर रख सकते हैं। हम उसको तोड़ सकते हैं। हम मिट्टी से घड़ा या कटोरा बना सकते हैं। हम सोने से चाहे कड़ा बनावें चाहे कुण्डल। हम आटे से रोटी बना सकते हैं और चाहें तो उससे पूरी बना लें। इसलिए यह कहना कि हम सर्वथा परतन्त्र हैं गलत है। यदि हम कुछ बातों में परतन्त्र हैं तो बहुत-सी बातों में स्वतन्त्र भी है। परतन्त्रता के अंश में हम मेज के तुल्य हैं, परन्तु स्वतन्त्रता की अपेक्षा से हम मेज से सर्वथा भिन्न है।

हमारे स्वतन्त्रता का ही फल है कि हमने सृष्टि में अनेक प्रकार के परिवर्तन कर दिये। सृष्टि को हम उसी प्रकार का नहीं छोड़ते जैसे ईश्वर बनाता है। उसने एक सीमा बाँध दी है जिसके भीतर-भीतर हम मनमाने परिवर्तन करते रहते हैं। ईश्वर ने सूरज और चाँद बनाए। हमने उनको देख-देखकर दीपक, लालटेन आदि बना लिये। ईश्वर ने नदियाँ बनाई, हमने नहरें निकालीं। ईश्वर ने सरोवर बनाया, हमने उन्हीं को देख-देखकर घड़ा शकोरा आदि अनेक प्रकार के पात्र बना डाले। ईश्वर ने तैरने के योग्य साधन मछलियों को दिये। हमने उनका अनुकरण करके नावें, जहाज आदि बनाए। ईश्वर ने पक्षियों को उड़ने के लिए दिये। हमने भी वायुयान बनाये। ईश्वर ने हमारे कान बनाए। इनको देखकर हमने ग्रामोफोन आदि बनाए। सारांश यह है कि यदि मनुष्य आदि प्राणियों के कामों का निरीक्षण किया जाए तो पता चलता है कि वे ईश्वर के कार्यो को देख-देखकर अपनी स्वतन्त्रता और स्वच्छंदता का प्रयोग करते हुए कुछ न कुछ किया करते हैं।

इस प्रकार तीन कोटियाँ हैं। एक ईश्वर है जो सर्वथा स्वतन्त्र है, एक हम प्राणी हैं जो किसी अंश में स्वतन्त्र हैं और किसी अंश में परतन्त्र और एक जड़ पदार्थ हैं जो सर्वथा परतन्त्र हैं।

कुछ लोग समझते हैं कि मनुष्य प्रकृति के हाथ में खिलौना मात्र है। ईश्वर ही स्वतन्त्र है। हम सब सर्वथा परतन्त्र हैं। ईश्वर की आज्ञा के बिना पत्ता तक नहीं हिल सकता। परन्तु यह बात ठीक नहीं है। यदि हम सर्वथा परतन्त्र होते तो हम किसी काम के उत्तरदाता भी न होते। यदि उत्तरदाता न होते तो ईश्वर हमको दुःख या सुख क्यों देता? मेरे हाथ में कलम है। कलम सर्वथा मेरे अधीन है: सर्वथा परतन्त्र है। चाहे इस कलम से मैं गाली लिख दूँ, चाहे कोई ज्ञान की बात। ज्ञान की बात लिखने से कलम की प्रशंसा न होगी और न गाली लिखने से उनकी बुराई, क्योंकि भलाई या बुराई लिखने से उनकी बुराई क्योंकि भलाई या बुराई लिखनेवाले की है, कलम की नहीं। इसी प्रकार यदि परमात्मा मनुष्य को किसी अंश में स्वतन्त्र न छोड़ता तो धर्म-अधर्म, पुण्य-पाप, भलाई, बुराई कुछ न होती। हम कलम को अधर्मी नहीं कहते, न उसको धर्मात्मा कहते हैं। यदि पुण्य-पाप, भलाई, बुराई न रही तो उसका फल दुःख या सुख भी न होगा, इसलिए यही मानना चाहिए कि हम अपने कर्म

करने में स्वतन्त्र हैं। चाहें बुरा करें चाहे भला, चाहे आलस्य और प्रमाद में पड़े रहें, चाहे परिश्रम और पुरुषार्थ करके अपनी तथा अन्य प्राणियों की उन्नति संपादन करते रहें, परन्तु हम फल पाने में अवश्य परतन्त्र हैं, क्योंकि ज्योंहि हमने अपना कर्म कर दिया उसका मनचाहा फल पाने का हमें अधिकार नहीं। हमको यह अधिकार है कि हम किसी को गाली दे बैठें, परन्तु गाली देने के पश्चात् ही हमारी स्वतन्त्रता छिन जाती है। अब दूसरे का अधिकार है कि वह हमको क्या और किस प्रकार से दण्ड दे।

ईश्वर सर्वथा स्वतन्त्र है! क्यों? इसलिए कि उसका कोई काम सुख या दु:ख भोगने के लिए नहीं होता। जो मनुष्य अपने लिए काम करता है, उसे फल भोगने के लिए परतन्त्र भी होना पड़ता है। परन्तु जो नि:स्वार्थ काम करता है उसे क्या चिन्ता? उसे क्या परतन्त्रता? ईश्वर काम अवश्य करता है परन्तु अपने लिए नहीं, जीव के हित के लिए। उसने सूरज अपने लिए नहीं बनाया किन्तु हमारे लिए बनाया है। उसने जल हमारे लिए बनाया है, उसे आग हमारे लिए जलाई है। उसने फल, फूल, वनस्पति आदि हमारे लिए उपजाए हैं। ईश्वर निष्क्रिय नहीं है परन्तु निष्काम अवश्य है। ईश्वर निरंतर कार्य करता है, परन्तु एक छोटी सी क्रिया भी उसके अपने लिए नहीं होती।

जीव अल्प शक्तिवाले हैं परन्तु परमात्मा सर्वशक्तिमान है। इसका अर्थ है कि ईश्वर में इतनी शक्ति है कि वह सब जीवों और सब परमाणुओं को अपने वश में रख सके। हममें भी शक्ति है क्योंकि हम भी कलम आदि को वश में रख सकते हैं। यदि हममें कोई भी शक्ति न होती तो ईश्वर को केवल शक्तिमान् कहते, सर्वशक्तिमान कहने की क्या आवश्यकता थी? परन्तु जब छोटी-छोटी शक्तिशाली अनेक और अनन्त सत्ताएँ हैं तो उन सब सत्ताओं को वश में रखने वाला सर्वशक्तिमान् कहलाता है।

ईश्वर एक है और जीव अनन्त हैं। सबका अधिपति एक ही हो सकता है। एक से अधिक स्वामी नहीं हो सकते। कुछ लोग समझते हैं कि जीव ईश्वर का अंश हैं अर्थात् एक ही ब्रह्म के भिन्न-भिन्न अंशों का नाम जीव है, जैसे समुद्र की भिन्न-भिन्न बूँदें होती हैं। पर यह बात नहीं है। ईश्वर अखण्ड और एक रस है। उसके टुकड़े नहीं हो सकते। टुकड़े उस वस्तु के होते हैं जो कई वस्तुओं के मिलने से बनती है। ईश्वर कई वस्तुओं से मिलकर नहीं बना और न उसके टुकड़े हो सकते हैं। हाँ, एक अर्थ में जीव को ईश्वर का अंश कह सकते हैं, अर्थात् ईश्वर जिस प्रकार चेतन है उसी प्रकार जीव भी चेतन है। ईश्वर की चेतनता बड़ी है, जीव की छोटी। परन्तु जीव की यह चेतनता ईश्वर की चेतनता नहीं है, जीव की अपनी चेतनता है। यदि जीव ईश्वर का अंश होता हो उसमें दु:ख, अज्ञान आदि अवगुण भी न होते।

कुछ लोग समझते हैं कि जीव ईश्वर की छाया-मात्र है, जैसे सूरज की छाया पानी में पड़कर चमकती है। परन्तु यह बात भी नहीं है। छाया पड़ने के लिए अपने से भिन्न कोई वस्तु चाहिए। सूरज की छाया भूमि के जल में तो पड़ सकती है, परन्तु अपनी आँख की पुतली में अपना ही बिम्ब दिखाई नहीं पड़ सकता। ईश्वर सब में व्यापक है, अत: उससे बाहर कोई वस्तु नहीं और उसकी छाया भी किसी पर नहीं पड़ सकती। इसलिए जीव न ईश्वर का अंश है न छाया।

फिर क्या जीव वस्तुत: ब्रह्म है? कदापि नहीं। जीव जीव है। जीव ब्रह्म नहीं। ब्रह्म होता तो उसमें ब्रह्मत्व होता। उसमें दोष न होते, त्रुटियाँ न होतीं, दु:ख और क्लेश न होता, अज्ञान न होता। कुछ लोग समझते हैं कि माया अथवा अन्य आवरण के कारण जीव अपने को दु:खी या अज्ञानी समझता है, परन्तु यह गलत है। पूर्ण ज्ञानी और सर्वशीलमान् तथा प्रकाशस्वरूप ब्रह्म को कौन आवरण छिपा सकता है? उसको कौन परदे में ढक सकता है? उसको कौन भ्रम में रख सकता है? अल्प जीव के लिए तो सम्भव है कि उसकी बुद्धि पर परदा पड़ जाए! उसे दु:ख का सुख में और सुख का दु:ख में भान हो सके! परन्तु जिस ब्रह्म को उपनिषदों में सत्य, ज्ञान, अनन्त कहा है उसको कोई बुराई सता नहीं सकती। वह किसी उपाधि से सीमित नहीं हो सकता।

ईश्वर हमारा पिता है, माता है, बन्धु है, परन्तु उसी प्रकार नहीं जैसे हमारे भौतिक माता, पिता या बन्धु होते हें। इससे केवल उस प्रेम का तात्पर्य है जो पिता, माता या भाई करते हैं। ये आलंकारिक शब्द हैं जो ईश्वर के अत्यन्त प्रेम को दिखाने के लिए प्रयुक्त होते हैं। वस्तुत: जितना प्रेम

ईश्वर को हमसे है उतना किसी को किसी को किसी से नहीं। माता और भाईयों के प्रेम में स्वार्थ की बू आ सकती है, परन्तु ईश्वर के प्रेम में नहीं।

ईश्वर सर्वव्यापक है। वह अणु-अणु और परमाणु-परमाणु में विद्यमान है। वह जीव के भीतर है इसलिए उसको अन्तर्यामी कहते हैं। यह अन्तर्यामी ईश्वर हमारे सब कामों को जानता है और उसी के अनुकूल हमारी भलाई करता है। कुछ दार्शनिक लोगों का आक्षेप है कि जब तक हर परमाणु और हर जीव के बीच में कोई खाली स्थान न हो, उस समय तक कोई दूसरी वस्तु उसमें व्यापक नहीं हो सकती। इसलिए यदि परमाणु या जीव को एक असंयुक्त वस्तु माना जाय तो ईश्वर उसमें कैसे व्यापक हो सकेगा? परन्तु यह नियम भौतिक पदार्थों का है। दीवार में जहाँ-जहाँ छिद्र होते हैं वहाँ पानी व हवा भर जाती है, परन्तु जहाँ छिद्र नहीं होता वहाँ भर नहीं सकता। परन्तु अभौतिक चेतन पदार्थों के लिए यह नियम नहीं है। आकाश सब तत्त्वों में व्यापक है। इसी प्रकार ईश्वर समस्त जीवों और परमाणुओं में व्यापक है। ईश्वर की व्यापकता में भौतिक नियम नहीं लग सकता।

जीव निर्बल है परन्तु ईश्वर के सहारे से जीव में शक्ति आती है। जीव परतन्त्र है, परन्तु जितना यह ईश्वर के भरोसे रहता है उतनी ही इसमें स्वतन्त्रता आती है। परन्तु जीव को पुरुषार्थ छोड़कर ईश्वर का भरोसा नहीं करना चाहिए। ईश्वर जीव की केवल इतनी सहायता करता है कि उसको अपना पुरुषार्थ करने की सामग्री देता रहे, परन्तु जो पुरुषार्थ नहीं करता उसकी ईश्वर सहायता भी नहीं करता। ईश्वर जीव को अपने हाथ का खिलौना बनाना नहीं चाहता, किन्तु वह उसको मित्र बनाना चाहता है। मित्र वह नहीं है जो रोटी का टुकड़ा तोड़कर मेरे मुँह में देता है, मित्र वह है जो शक्ति बढ़ाने में मेरी सहायता करे। जो जातियाँ ईश्वर से विमुख हो जाती हैं वे अत्याचारी और अभिमानी होकर क्रूर हो जाती हैं और किसी न किसी दिन उनको मुँह की खानी पड़ती है। परन्तु जो जातियां ईश्वर का ही नाम रटा करती हैं और पुरुषार्थ नहीं करतीं, उनकी शक्ति क्षीण हो-होकर वे अत्यन्त निर्बल हो जाती है और अन्त में उनको ईश्वर नाम जपने का सामर्थ्य भी नहीं रहता।

कुछ लोग समझते हैं कि जिस प्रकार राजा, रईस या नवाब लोग चाटुकारिता पसन्द करते हैं, उसी प्रकार ईश्वर भी चाटुकारिता पसन्द करता है। रईसों के बहुत-से चालाक नौकर काम तो नहीं करते, परन्तु स्वामी के सामने चिकनी-चुपड़ी बातें बनाते रहते हैं। धनी लोग उनसे प्रसन्न रहते हैं। इसी प्रकार ये लोग ईश्वर की आज्ञा का पालन तो नहीं करते परन्तु उसका नाम रटते हैं, उससे इनको कोई फल प्राप्त नहीं हो सकता। हम दूसरों को तो चिकनी-चुपड़ी बातों से बहला सकते हैं, परन्तु ईश्वर को कौन धोखा दे सकता है। कि ईश्वर ने सृष्टि इसलिए नहीं बनाई कि लोग उसकी चाटुकारिता किया करें। ईश्वर ने प्राणियों के लाभ और हित के लिए बनाई है, इसलिए यदि हम अन्य जीवों के साथ भलाई करें तो ईश्वर हम पर अवश्य प्रसन्न होगा। लोग समझते हैं कि यदि ईश्वर चाटुकारिता नहीं चाहता तो फिर उसकी स्तुति क्यों करनी? यह गलत है। ईश्वर के गुणों का चिन्तन करने से अपने में शुभ गुणों के लिए प्रेम पैदा होता है और हम इसके द्वारा उन शुभ गुणों को अपने में धारण कर सकते हैं। ईश्वर की उपासना से अपने में साहस उत्पन्न कर अनेक पापों से हम बच सकते हैं।

सभी को चाहिए कि हम ईश्वर पर विश्वास करें, उससे प्रेम करें और उसका अनुकरण करें। जिस तरह वह निरन्तर कार्य करता है उसी प्रकार हम भी निरन्तर पुरुषार्थ करें। जैसे वह समस्त जीवों के हित काम करता है उसी प्रकार हम भी समस्त जीवों के हित के लिए निःस्वार्थ भाव से उद्योग करें। यही ईश्वर की भक्ति का अर्थ है। यदि हम ऐसा करेंगे तो ईश्वर अवश्य हम पर कृपा करेगा और हम ईश्वर के आनन्द के हिस्सेदार होंगे।

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं-

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

कर्म-फल सिद्धान्त से सम्बन्धित बातें

- संकलनकर्ता मा. बलजीत सिंह चिमनी, एम.ए. हिन्दी और अंग्रेजी बी.एड

1. मनुष्य अकेला ही संसार में आता है और अकेला ही संसार से चला जाता है।
2. मनुष्य को उसके कर्मानुसार ही परिवार मिलता है। जब वह जन्म लेता है तो प्रारब्ध कर्म साथ लाता है और जब मृत्यु होती है तो इस जन्म के संचय किए हुए कर्मो को साथ ले जाता है।
3. अच्छे कर्म अधिक करने पर अगले जन्म में मनुष्य का शरीर मिलता है और बुरे कर्म अधिक करने पर पशु, कीट-पतंग आदि का शरीर मिलता है।
4. यदि मनुष्य पचास प्रतिशत अच्छे कर्म करता है और पचास प्रतिशत बुरे कर्म करता है तो उसका अगला जन्म बहुत ही साधारण (निम्न) परिवार में होगा और पचास प्रतिशत बुरे कर्मो का फल भी भोगना पड़ेगा। फल भोगने के साथ-साथ जो नए कर्म वह करेगा उन नए कर्मो के अनुसार ही अगला जन्म मिलेगा।
5. कोई किसी को दु:ख या सुख देता है तो वह अपने लिए ही दु:ख या सुख का बीज बो रहा होता है वैसा ही दु:ख या सुख रूप फल उसे अवश्य ही मिलता है। ईश्वर किसी भी मनुष्य के पाप को किसी भी परिस्थिति में क्षमा नहीं करता है। किसी कवि के शब्दों में-न तो देर है न अन्धेर है ये सब कर्मो का ही फेर है, अपना कर्म ही सुख देता है, अपना कर्म ही दु:ख देता है। कर्म बना जीवन देता है और कर्म मिटा जीवन देता है।
6. मनुष्य पाप और पुण्य तीन तरह से करता है-मन से, वाणी से व शरीर से। इनका फल भी इसी प्रकार से मिलेगा।
7. मनुष्य अपने जन्म के समय जिन पारिवारिक सदस्यों के साथ होता है मृत्यु के समय उनमें से शायद ही कोई साथ हो। उस समय लगभग सभी सदस्य नये होते हैं अत: अगले जन्म में भी अपने-अपने कर्मानुसार ही एक दूसरे के सम्बन्ध (रिश्ते-सगे सम्बन्धी) बनते हैं।
8. मनुष्य जो भी अच्छे बुरे कर्म करता है उनका फल अच्छे व बुरे के रूप में भोगना ही पड़ता है। फल भोगे बिना किया हुआ कर्म समाप्त नहीं होता है अत: मनुष्य को अपने उज्जवल भविष्य के लिए अच्छे ही कर्म करने चाहिए।
9. परमात्मा सर्वत्र मौजूद है वह सब कुछ देख रहा है, सुन रहा है। अत: जो परमात्मा को हर जगह मौजूद समझेगा वह कभी अशुभ कर्म नहीं करेगा।
10. मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है लेकिन कर्म का फल ईश्वर देगा। कर्मफल से मनुष्य बच नहीं सकता।
11. जैसे हजारों गायों में बछड़ा अपनी माँ को पहचान लेता है उसी प्रकार मनुष्य के लिए हुए कर्म उसका पीछा नहीं छोड़ते हैं।
12. परमात्मा इतना सूक्ष्म है कि इन आँखों से नहीं देखा जा सकता है। उसकी रचना देखकर उसका आभास (अनुभव) किया जा सकता है जैसे-पहाड़, समुद्र, रेतीले टीले, बर्फ, मनुष्य, पशु, कीट-पतंग आदि का बनाना।
13. मनुष्य द्वारा किया अशुभ कर्म जब पक कर तैयार हो जाता है तो फल देने के समय विनाशकाले बुद्धि विपरीत हो जाती है और मनुष्य की कोई भी चतुराई काम नहीं देती है। पाप फल भुगतने के बाद ही समाप्त होता है।
14. निर्बल व असहाय निरपराध प्राणियों को यातना देने का परिणाम बहुत ही भयावह होता है जिसे व्यक्त करना मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है। इसका परिणाम इस दोहे से समझा जा सकता है-निर्बल को न सताइये जाकि मोटी हाय, बिना जीव की खाल से लोह भस्म हो जाए।
15. किसी के अच्छे व बुरे कर्म का फल तत्काल प्राप्त होता न देखकर तुम यह मत विचारा कि कर्मो का फल नहीं मिलेगा। कर्मफल से कोई बच नहीं सकता क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वत्र तथा न्यायकारी है। प्रत्येक कर्म की अवधि होती है जिस प्रकार विभिन्न फसलों के पकने की अपनी-अपनी अवधि होती है।
16. कभी अच्छे कर्म करने वाला दु:ख भोग रहा होता है तो यह समझो कि उसके पिछले किए हुए कर्म का फल परिपक्व होकर उसे मिल रहा

है। उसके अच्छे कर्मों का फल भविष्य में मिलेगा। इसी प्रकार बुरे कर्म करने वाला सुख भोग रहा होता है तो समझो उसके द्वारा किए हुए अच्छे कर्म का फल अभी मिल रहा है बुरे कर्मों का फल आगे मिलेगा।

17. मन, वाणी व शरीर से विकार रहित होकर ईश्वर की विशेष भक्ति उपासना आदि करने से कर्ता द्वारा विगत में किए हुए अशुभ कर्म पककर शीघ्र फल देने लगते हैं और अन्ततोगत्वा भुने हुए चने की भांति दग्धबीज हो जाते हैं।

18. कर्म दो प्रकार के होते हैं एक सकाम कर्म जो फल की इच्छा से किए जाते हैं जिन्हें भोगने के लिए जन्म-धारण करना पड़ता है। दूसरे निष्काम कर्म जो नि:स्वार्थ भाव से केवल परोपकार के लिए ही किए जाते हैं निष्काम कर्म का फल मोक्ष की प्राप्ति है और जीव को जन्म धारण नहीं करना पड़ता और जीवन मुक्त होकर परमात्मा के सान्निध्य में 31 नील 10 खराब 40 अरब वर्षो तक जीव आनन्द भोगता है यही मनुष्य का सर्वोच्च लक्ष्य है। इस अवधि के बाद पुन: मनुष्य का जीवन मिलता है।

19. तीन बातें अज्ञात हैं जो केवल परमात्मा जानता है, जन्मना, मृत्यु व विवाह आदि। मनुष्य अपने बच्चों के लिए अच्छा से अच्छा रिश्ता खोजने की कोशिश करता है परन्तु बच्चों के कर्मानुसार ही रिश्ते बनते हैं ये पिछले जन्मों के कर्मानुसार (संस्कार) से बनते हैं।

20. अपनी आत्मा के समान दूसरे की आत्मा को समझें जो दूसरों से व्यवहार चाहते हो वैसा ही व्यवहार दूसरों के साथ भी करें। लेकिन दूसरों से ज्यादा अपेक्षा न करें क्योंकि प्रत्येक में जन्म-जन्मान्तर के संस्कार अलग-अलग होते हैं अत: किसी से ज्यादा अपेक्षाएं करना ही दु:ख व क्लेश का कारण बनता है।

21. मृत्यु व भगवान को हमेशा याद रखना चाहिए अपना अहो-भाग्य समझो कि तुम्हें मनुष्य का चोला मिला है अत: शुभकर्मो से अपने जीवन को धन्य बनाओ ताकि अन्त में पछताना न पड़े।

22. अज्ञानतावश मनुष्य से जाने या अनजाने में कोई अशुभ कर्म हो जाता है तो उसके निवारण के लिए सबसे अच्छा तरीका यह है कि अशुभ कार्य करने का अहसास होने पर मनुष्य सच्चे हृदय से प्रायश्चित करे। उस अशुभ कार्य के फलस्वरूप भविष्य में जो पहाड़रूपी दु:ख आयेगा उसको सहज रूप में भोगने की शक्ति प्राप्त हो जायेगी। अशुभ भाव कभी उत्पन्न ही न हो इसके लिए यम-नियमों का दृढ़ता से पालन करना चाहिए और पंच महायज्ञों के करने से तो स्वर्ग रूपी सुख प्राप्त होता है।

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं–

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

महारानी द्रोपदी

-श्री राजवीर जी आर्य, ट्रस्टी आत्मशुद्धि आश्रम

यह मिथ्या आरोप महारानी द्रौपदी पर क्यों लगाया हुआ है? इसका कारण यह है कि आज से लगभग 3000 वर्ष पूर्व तक तो हमारा इतिहास लगभग ठीक था लेकिन जब से स्त्री जाति को शुद्र शुद्री समझा गया, तभी से हमारी वीरांगनाओं का सत्य इतिहास समाप्त करके अवगुणों का समूह बताया जाने लगा। अब आगे द्रौपदी के प्रसंग में बहुत महत्वपूर्ण विषय आ रहा है जिसे जानकर द्रौपदी विषयांक बहुत सा भ्रम दूर हो जायेगा। यद्यपि इन्द्रप्रस्थ से जब श्री कृष्ण और विदुर आदि राजसूय यज्ञ के पश्चात् चलने लगे तो महाराजा युद्धिष्ठिर को दुर्योधन से सावधान करके चले थे लेकिन होनी या प्रारब्ध को कौन टाल सकता है? एक षड्यन्त्र के चलते राजा धृतराष्ट्र से युद्धिष्ठिर को परिवार सहित हस्तिनापुर बुलवाया गया और वहां दुर्योधन, कर्ण, शकुनि और दुशासन के षड्यन्त्र का युद्धिष्ठिर शिकार हो गया। अपने व्यसन के कारण सारा राज-पाट, धन दौलत आदि जुए में हार गया। पाँचों भाई दास बन गये और द्रौपदी बन गई दासी। जब रजस्वला द्रौपदी को दुशासन बालों से पकड़कर लाया तो वहां उपस्थित सभी वृद्धों ने इसे बुरा कर्म बताया लेकिन विदुर के अतिरिक्त किसी ने खुलकर विरोध प्रकट नहीं किया। पहले तो द्रौपदी रोती पीटती रही, दया की भीख मांगती रही, कुल की मर्यादा को समझाने लगी, लेकिन सब व्यर्थ सिद्ध हुआ। तद्पश्चात द्रौपदी ने जो बुद्धिमता, विद्वता, नीति का परिचय दिया है उससे उस महारानी द्रौपदी के गुणों के प्रति हम नतमस्तक होते हैं। इस जुए वाले प्रकरण का विवरण निम्नलिखित है। जब युधिष्ठिर को द्रौपदी को दांव पर लगाने के लिए शकुनि ने उकसाया तो युद्धिष्ठिर ने कहा-

नैव हस्वा न महती न कृशा नाति रोहिणी।
नीलकुंचितकेशी च तया दीव्याम्यहं त्वया।।33।।
शारदोत्पलपत्राक्ष्या शारदोत्पलगंधया।
शारदोत्पल सेविन्या रूपेण श्री समानया।।
तथैव स्यादानृशंस्यात्तथास्याद्रपसंपदा।
तथास्याच्छलिलं पत्त्यायामिच्धुत्पुरुषः स्यिम्।।
सर्वेर्गुणर्हि सम्पन्नामनुकूलां प्रियंवदाम।
यादृशी धर्मकामार्थ सिद्धिमिच्छेन्नरः स्त्रियम।।
33, 34, 35, 36, सभापर्व पृष्ठ 822

(अर्थात् युधिष्ठिर बोला कि हे शकुनि 'जो द्रौपदी न बहुत छोटी, न बड़ी और न ही अति कृश और ना ही बहुत मोटी है, जिसके केश घुंघराले और काले, जिसके शरीर में से कमल जैसी सुगन्ध आती है तथा जिसके नेत्र शरदऋतु के फूले हुए कमलों के समान, जिसका स्वरूप लक्ष्मी के समान है, जिसके आज्ञापालनरूप गुण, मधुर भाषण और धर्म, अर्थ तथा काम की सिद्धि को देखकर ऐसा कौन पुरुष है जो उसे ना चाहेगा।)

आगे कहता है कि उस पतली कमर वाली पांचाली को इस प्रकार दांव पर लगाना बड़े ही दुःख की बात है परन्तु मैं उसे भी दांव पर लगाता हूँ। द्रौपदी को भी हार जाने के पश्चात् सभा के अन्दर खलबली मच गई। विशेषतया महात्मा विदुर ने इसका घोर विरोध किया लेकिन कर्ण, दुर्योधन आदि के दबाव में दुशासन द्वारा केशों से पकड़ कर द्रौपदी को लाया गया। दुर्योधन का एक भाई विकर्ण बहुत धर्मात्मा था, उसने भी राजा के चार व्यसनों पर प्रकाश डाला कि जो राजा मृगया, जुआ, मघपान व परस्त्री में रत्त रहता है, वह शीघ्र ही समाप्त हो जाता है। जब द्रौपदी को दासी कहकर अपमानित किया जा रहा था और उसी समय उसके चीर हरण करने वाली बात को हम सत्य नहीं मानते हैं। हाँ, उसने इतना अवश्य कहा होगा कि यदि योगेश्वर कृष्ण यहां होते तो वे सभी कौरवां को अपने क्रोध से नष्ट कर देते। इस भारी संकट को द्रौपदी ने किस बुद्धिमता से दूर किया अब वह आपको बतलाते हैं। जब द्रौपदी को दासी शब्द से सम्बोधित कर अपमानित किया जा रहा था, तो द्रौपदी ने कहा कि पहले युद्धिष्ठिर अपने आपको दांव पर लगाकर हार चुके है इसीलिए हारा हुआ व्यक्ति अर्थात् दास भाव को प्राप्त हुए व्यक्ति को अन्य किसी को दांव

पर लगाने का अधिकार ही नहीं है।

यह एक नितिगत विषय सभा के सामने उपस्थित हो गया जिस सभा के अन्दर पितामह भीष्म, द्रोण, विदुर और धृतराष्ट्र उपस्थित थे। महात्मा विदुर ने कौरवों को झिड़कते हुए कहा कि तुम सदैव से इन सरल पांडवों से बैर रखे हुए हो। इसीलिए हर समय अनीति की सोचते हो। मैं समझता हूँ जो सत्य है कि जो जुआरी स्वयं को भी हार गया है वह किसी का स्वामी नहीं रह सकता। यदि युद्धिष्ठिर अपने को हारने से पहले द्रौपदी को हार जाता तो निःसन्देह द्रौपदी दासी भाव को प्राप्त होती। विदुर की बात का भीष्म, द्रोण तथा स्वयं महाराजा धृतराष्ट्र ने समर्थन किया और फिर द्रौपदी की बुद्धिमत्ता व विद्वता से प्रसन्न होकर कहा कि हे द्रौपदी यह दुर्योधन बड़ा नीच कर्मी है, तू इसकी बात पर ध्यान ना देकर मेरी बात सुन। तु वधुओं में श्रेष्ठ, धर्म चारिणी और पतिव्रता है, इसमें प्रमाण देखिएः

वरं वृणष्वि पांचालि मत्तो यद्म्विांछसि।
वधूनां हि विशिष्टामे त्वं धर्मपरमासती॥

यहाँ द्रौपदी को धृतराष्ट्र अपनी सब पुत्र वधुओं में श्रेष्ठ, धर्मचारिणी, पतिव्रता (पतिव्रता वही होती है जो एक पति में कामना रखती है, न कि पांच-पांच) अब सोचिए कि द्रौपदी कोई साधारण स्त्री नहीं थी, वह तो उच्च कोटि की देवियों में शुमार है। फिर अपनी बुद्धि से सभी पाण्डवों को मुक्त करा लिया, खोया हुआ राज्य भी प्राप्त कर लिया। द्रौपदी के इस कृत्य को देखकर कहा ''मैंने आज तक जितनी भी स्वरूपवान स्त्रियां सुनी हैं, उनमें से ऐसा कर्म किसी स्त्री ने नहीं किया है और ना ही ऐसा सुना है, जैसा द्रौपदी ने किया इसने पाण्डवों तथा धृतराष्ट्र के पुत्रों के क्रोध को शान्त करके पाण्डवों को महादुःखरूपी समुन्द्र से नौकारूप होकर निकाला है।

(सभापर्व श. 1-2-3, प्र. 859)

जादू वह शिर पर चढ़कर बोले। कर्ण जैसे धुर विरोधी भी द्रौपदी की प्रशंसा करते हैं। परन्तु बात यहीं समाप्त नहीं हुई। दुर्योधन और उसकी मण्डली ने पुनः एक षड्यन्त्र रचा कि युद्धिष्ठिर राजा धृतराष्ट्र की बात को नहीं मोड़ सकता। दूसरा उसको जुआ खेलना भी नहीं आता पर इसका व्यसन उसके अन्दर है। इसीलिए राजा धृतराष्ट्र पर दबाव बनाकर जुए का कार्यक्रम फिर बनाया गया। यद्यपि द्रोणाचार्य, सोमदत्त, विदुर, अश्वथामा, भीष्मपितामह और विकर्ण ने इस कृत्य का विरोध किया। यहाँ तक कि गांधारी ने भी राजा धृतराष्ट्र को कहा कि इस दुर्बुद्धि दुर्योधन कि बात आप मत मानो यह तो कुलकलंकी है। ऐसा इसके जन्म के समय महात्मा विदुर ने कहा था और इसने उत्पन्न होते ही गीदड़ रोने जैसा शब्द किया था। आप इसकी बात मानकर कुल का नाश ना करें लेकिन धृतराष्ट्र तो मोह में अंधा हो गया था। जुआ खेला गया लेकिन अबकी बार दांव यह था कि जो हार जायेगा वह परिवार सहित बारह वर्ष तक वनवास और एक साल अज्ञातवास में रहेगा और अगर अज्ञातवास में पता चल जाता है तो फिर बारह वर्ष का बनवास मिलेगा। यही हुआ युद्धिष्ठिर जुआ हार गया और अपने भाईयों एवं द्रौपदी सहित वनवास को चला गया। अपनी माता कुन्ती को विदुर के कहने से उसके पास छोड़ दिया कि यह इस अवस्था में कहां वन के अन्दर जायेगी। जब द्रौपदी ने कुन्ती से जाने की आज्ञा मांगी तो कुन्ती कहती है:- **स्त्रीधर्माणामभिज्ञासि शीलाचारवत** तथा (श.-4) समापर्व

(अर्थात् हे द्रौपदी इस विपत्ति को देखकर चिन्तातुर होना उचित नहीं क्योंकि तू तो स्त्रीधर्म की मर्यादा को अच्छी तरह जानती है और सुशीला है।) इसके पश्चात राजा धृतराष्ट्र अपने भाई के पुत्रों के साथ ऐसा छल कपट करने पर बड़ा पश्चाताप कर रहा था। तब भी वह कह रहा था कि ''राजा द्रुपद की लड़की द्रौपदी के समय इस भूमण्डल पर कोई स्त्री नहीं है।'' पाण्डवों के वन जाने के पश्चात राजा धृतराष्ट्र चिन्तातुर हो गया। जब ये जुए का घटनाक्रम घटित होकर पाण्डव वन में निवास करने लगे, उस समय श्री कृष्ण शाल्व नरेश के साथ युद्ध में व्यस्त थे। क्योंकि शाल्व ने शिशुपाल के वध के पश्चात कुण्ठित होकर द्वारका नगरी पर आक्रमण करके उसे तहस-नहस कर दिया था। श्री कृष्ण के जानने पर उन्होंने शाल्व नरेश को जा पकड़ा। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ क्योंकि जिस तरह से रावण का बेटा मेघनाद मायावी युद्ध कला में प्रवीण था, ठीक उसी तरह शाल्व नरेश मायावी युद्ध में दक्ष था। उसके पास हवाई बेड़ा भी था। लेकिन श्री कृष्ण ने उसे मार गिराया और पाण्डवों की कुशलक्षेम जानने के लिए इन्द्रप्रस्थ गया। जहां सारे घटनाक्रम का भेद जानने पर बहुत दुःख हुआ और पाण्डवों के पास वन में मिलने जा पहुंचा।

संसार में सुख-शान्ति का एक मात्र उत्तम मार्ग चरित्र निर्माण

-पं. उम्मेदसिंह विशारद

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मानव जगत् में सुख शान्ति के लिए संस्कार विधि की रचना करके जन्म से मृत्यु तक सोलह संस्कारों को करने का विधान किया है। वह कहते हैं जिसे करके शरीर आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं, इसलिए संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित हैं।

जीवात्मा अमर तथा नित्य है। जन्म जन्मातरों के उसके साथ सूक्ष्म शरीर मृत्यु, पर्यन्त रहता है और यही सूक्ष्म शरीर जन्म-जन्मातरों के संस्कारों या वासनाओं का वाहक होता है। ये संस्कार शुभ व अशुभ दोनों प्रकार के होते हैं। जब जीवात्मा दूसरे शरीर में प्रवेश करता है उसको नई परिस्थिति के भी बहुत से शुभाशुभ प्रभाव मिलते हैं। उनके प्रभावों को अभिभूत करने तथा शुभ प्रभावों को उन्नत करने के लिए संस्कारों या स्वच्छ वातावरण की परम आवश्यकता है।

पन्चस्वन्तः पुरुष या वियेश (यजुः)

इस लेख द्वारा आज हम मनुष्य के पांच मौलिक चरित्रों पर विचार करके जीवन में उतारने की प्रेरणा करते हैं। मानव को उत्तम स्वभाव बनाने के लिए सर्वप्रथम पांच बातों का ध्यान रखना चाहिए और सम्पूर्ण मानव जगत् पांच के भीतर स्थित है। प्रत्येक जहां अपने आप में प्रविष्ट है, विश्व में प्रविष्ट है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में एक इकाई है किसी परिवार का अंग है, किसी समाज का अंग है। किसी समाज का सदस्य है, राष्ट्र का सदस्य है। विश्व का सदस्य है। परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व का नागरिक होने से उसकी रिश्ते नाते में कई भूमिकाएं हैं। उनको तभी निभा सकता है जब अपने संस्कारों में पांच प्रकार के चरित्रों का निष्पादन करे। यदि प्रत्येक मनुष्य इन चरित्रों को अपनाने में अपनी भूमिका अदा करे तो मानव समाज में चारों और सुख-शान्ति बनी रहेगी। आइए इन पांच चरित्रों पर विचार करते हैं।

उत्तम चरित्र की पांच शाखाएं हैं

1. वैयक्तिक चरित्र, 2. परिवारिक चरित्र, 3. सामाजिक चरित्र, 4. राष्ट्रीय चरित्र, 5. विश्व चरित्र।

इन चरित्रों के निर्माण व व्यवहार से मानव सच्चे अर्थो में समाज का निर्माण करता है और धर्मात्मा वही है जो उक्त चरित्रों का पालन करता है। यदि किसी में इनका अभाव है तो वह अधर्मी है।

1. वैयक्तिक चरित्र-इस चरित्र का सम्बन्ध मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन से है और यह व्यक्तिगत चरित्र ही परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व में सहायक होते हैं। इसके उन्नति व निर्माण के लिए सात गुण अति आवश्यक है।

सुश्रुति-अर्थात् सदैव अपने दैनिक आचरण में सुविचारों को ही ग्रहण करना।

सुवाणी-अर्थात् सत्यवाणी, मधुरवाणी, सयंतवाणी, निर्मलवाणी का प्रयोग करना।

सुस्नेह-अर्थात् परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के प्रति सुस्नेह रखना।

सुसयंम-अर्थात् प्रत्येक कार्य में स्वयं में संयम रखकर व्यवहार करना।

र्निलोभी-अर्थात् लोभ की भावना का त्याग व निःस्वार्थ कार्यो की प्रबलता।

सुसेवा-अर्थात् जीवन के विचारों को परहित सुसेवा में प्रधानता देना।

निःस्वार्थी-अर्थात् प्रत्येक कार्य में अपना स्वार्थ न देखकर परमार्थ रखना।

ये सात गुण उत्तम चरित्र के मूलाधार हैं और प्रत्येक मनुष्य को अपने व्यक्तित्व के लिए इन सप्त गुणों पर आधारित होना चाहिए, यदि परिवार का प्रत्येक सदस्य उक्त आचरणों के संस्कार बना ले तो परिवार व समाज व राष्ट्र में सर्व उन्नति होगी। शिष्ट व्यक्ति अशिष्टता का उत्तर शिष्टता से देता है, अभद्रता का भद्रता से, अपमान का मान से, बुराई का भलाई से अन्याय का न्याय से उत्तर देता है। व्यक्तिगत उत्तम चरित्र सभी मनुष्यों के लिए अनिवार्य है।

2. परिवारिक चरित्र-यदि व्यक्तिगत चरित्र उत्तम है, पारिवारिक समूह का भी उत्तम होगा। परिवार के चरित्र में क्रोध, मनमुटाव, रूष्ट होना और बोल चाल बन्द करने का कोई स्थान नहीं है। प्रत्येक सदस्य को एक दूसरे का ध्यान रखना चाहिए, एक दूसरे की भावनाओं की

कदर करनी चाहिए। एक दूसरे की उन्नति में सहायक होना चाहिए। परिवार में शारीरिक उन्नति, मानसिक और आत्मिक उन्नति के कार्य करने चाहिए। सारे परिवार को सत्य, ईश्वर और ईश्वरीय वाणी वैदिकधर्मी व वैदिक संस्कारों वाला होना चाहिए। सबको परिवार में मधुर भाषा का प्रयोग करना चाहिए। खानपान सात्विक होना चाहिए। यह गुण परिवार के प्रत्येक सदस्य के संस्कारों में तभी आ सकते हैं जब परिवार के प्रत्येक सदस्य का व्यक्तिगत चरित्र उत्तम होगा।

3. सामाजिक चरित्र-मानव सामाजिक प्राणी है, इसे हर कदम पर प्रत्येक वस्तु के लिए एक दूसरे की सहायता लेनी पड़ती है। अर्थात् हम एक दूसरे के ऋणी रहते हैं। सर्व हितकारी नियम पालन करना चाहिए। सबको अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। सामाजिक चरित्र तभी उन्नत होगा, जब निम्न पांच नियमों का पालन प्रत्येक नागरिक, सामाजिक संस्थाएं, धार्मिक संस्थाएं करते हो।

अहिंसा-मन, वचन, कर्म से किसी भी प्राणी को हानि न पहुंचाना।

सत्य-प्रत्येक कृत्य और व्यवहार में सदैव सत्य का पालन करना।

अस्तेय-किसी को भी धोखा देकर दूसरे की वस्तुओं को न लेना, अर्थात् झूठ न बोलना।

ब्रह्मचर्य-सभी नागरिकों को सदाचारी होना।

अपरिग्रह-आवश्यकता से अधिक धन व सम्पत्ति न जोड़ना तथा लोभ न करना।

अर्थात्-मनसा वाचा कमर्णा से सबको एक होना चाहिए। मानव समाज की इकाई व बुनियाद है इसलिए सामाजिक सेवा व उन्नति में समाज तथा के नियमों का पालन समझदारी की भावना से करना चाहिए।

उदाहरण-हमें याद रखना चाहिए कि हम सदैव समाज के ऋणी होते हैं। उदाहरण रूप में ले लीजिए हम एक कप चाय पीते हैं तो कितने लोगों के सहयोग से पीते हैं। किसी ने चाय के बगीचे में चाय की पत्तियां तोड़ी किसी ने सुखाई तो किसी और ने तैयार की। किसी ने खेत में गन्ना बोया, किसी ने चीनी तैयार की, किसी ने दूध उत्पादन किया, किसी ने बनाकर पिलाई। अब आप देखिए हम दैनिक जीवन में कितनी वस्तुओं का प्रयोग करते हैं। एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं अर्थात् हम प्रत्येक क्षण समाज के ऋणी रहते हैं।

4. राष्ट्रीय चरित्र- मातृभक्ति, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्र निष्ठा, राष्ट्र सेवा, राष्ट्र के लिए बलिदान की भावना सदैव राष्ट्र की उन्नति के कार्य करना ये सब राष्ट्र प्रगति के साधन है। हमारे सर्वप्रथम और सर्वश्रेष्ठ कार्य व कर्त्तव्य मातृभूमि की रक्षा करना है। राष्ट्र रक्षा हेतु जिन वीरों ने बलिदान दिए हैं तथा जिन समाज सेवियों ने राष्ट्र के लिए उत्तम कार्य किए हैं उनका स्मरण, अनुकरण, सम्मान करना चाहिए, अर्थात् राष्ट्र की समृद्धि, स्वच्छ, विचार, समान अधिकार, राष्ट्रभक्ति व राष्ट्र प्रेम और सर्व हितकारी नियमों का पालन प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।

5. विश्व चरित्र- अन्तर्राष्ट्रीय नीति में शुद्धता, विदेश नीति का पालन, राष्ट्र की मर्यादा को अक्षुण बनाने हेतु संयुक्त राष्ट्रसभा में अपने राष्ट्र की उत्तम नीतियों को स्पष्टता से रखना, राजनीतिक सम्बन्धों को मधुर बनना, सर्वहितकारी वार्ता द्वारा राजनैतिक समझौते करना, संयुक्त राष्ट्र सभा के नियमों का पालन करना।

युद्धनीति के बजाए आपसी सहमति से शान्ति स्थापित करना तथा आयात-निर्यात वस्तुओं पर सन्तुलन सर्वहित में बनाकर रखना तथा छोटे से छोटे और बड़े से बड़े राष्ट्र का सम्मान करते हुए सर्वहित नियमों का पालन करना। ये सभी गुण अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में प्रत्येक राष्ट्र को सुखद बनाते हैं।

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, चलभाषः 9416054195

ऋग्वेद में पति-पत्नी का आपसी व्यवहार

- शिवनारायण उपाध्याय, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी-कोटा

ऋग्वेद विश्व पुस्तकालय में प्राचीनतम ग्रन्थ माना गया है। आर्य लोग तो वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। वेदों में मानद जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए आवश्यक ज्ञान उपलब्ध है। ऋग्वेद चारों वेदों में सबसे अधिक सामग्री अपने में समेटे हुए है। इसमें 10521 ऋचाएं है जिनमें ज्ञान-विज्ञान की अनेक विधाओं पर विचार किया गया है। मानव जीवन को सफलता के उच्च शिखर तक पहुंचाने के लिए इसमें वर्ण व्यवस्था तथा आश्रम व्यवस्था पर गहन चिन्तन हुआ है। गृहस्थ आश्रम के सभी आश्रमों का राजा माना गया है। इसका कारण यह है कि शेष तीन आश्रमों यथा ब्रह्मचर्य आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और संन्यास आश्रम के भरण पोषण भी इसी के द्वारा किया जाता है।

गृहस्थ आश्रम रूपी गाड़ी के दो पहिये है पति और पत्नी। ये दोनों मिलकर ही गृहस्थ आश्रम को सुचारू रूप से चलाने के साथ-साथ अन्य आश्रमों की व्यवस्थाओं को भी गति देते हैं। पति-पत्नी मिलकर ही श्रेष्ठ संतान को जन्म देकर ब्रह्मचर्य आश्रम का विकास करते हैं। कालान्तर में गृहस्थ आश्रम ही वानप्रस्थ और संन्यास के लिए अपने में से कुछ लोगों को तैयार करके भेजता है। यदि गृहस्थ आश्रम ढंग से चलते हैं तो समाज में शांति और विकास का मार्ग विस्तृत होता है। इसके लिए सर्वप्रथम आवश्यकता इस बात की है कि पति और पत्नी में सामंजस्य और एक दूसरे के प्रति प्रेम और विश्वास हो। ऋग्वेद में पति-पत्नी के आपसी व्यवहार पर 250 से भी अधिक ऋचाएं है। इस लेख में हम उन्हीं में से 14 ऋचाओं को आधार बना कर विचार कर रहे हैं।

वास्तव में विवाह संस्कार के समय ही बना कर्म काण्डों के द्वारा वर-वधू दोनों को भविष्य में किस प्रकार आचरण करना है यह बता दिया जाता है! पति-पत्नी के हृदय आपस में मिले हुए हों, यह सबसे महत्वपूर्ण है। इसलिए ही विवाह मण्डल में पति-पत्नी निम्न मन्त्र उच्चारित करते हैं-

समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।
सम् मातरिश्वा सं धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ।
ऋ. 10.85.47

वर और वधू बोलें कि है (विश्वे देवा:) यज्ञ शाला में बैठे हुए विद्वानों। आप हम दोनों को (समुञ्जन्तु) निश्चय करके जाने कि हम दूसरे को गृहस्थाश्रम में रहने के लिए स्वीकार करते हैं। (नौ) हमारे दोनों के (हृदयानि) हृदय (आप:) जल के समान (सम्) शांत और मिले हुए रहेंगे। जैसे (मातरिश्वा:) प्राण वायु हमको प्रिय है वैसे (सम्) हम दोनों एक दूसरे से सदा प्रसन्न रहेंगे। जैसे (धाता) धारण करने वाला परमात्मा सबमें (सम्) मिला हुआ सब जगत् को धारण करता है वैसे हम दोनों एक दूसरे को धारण करेंगे। जैसे (समुदेष्ट्री) उपदेश करने वाला श्रोताओं से प्रीति करता है वैसे (नौ) हम दोनों का आत्मा एक दूसरे के साथ दृढ़ प्रेम को (दधातु) धारण करे।

इसी विचार धारा को निम्न विस्तार दे रहा है।

सुप्रतीके वयोवृधा यह्वी मातरा।
दोषामुषासमीमहे।। ऋ 5.5.6

हे मनुष्यों! जैसे हम लोग (सुप्रीतके) उत्तम विश्वास करने (वयोवृधा) सुन्दर जीवन को बढ़ाने और (यही) बड़े (ऋतस्य) सत्य के (मातरा) आदर देने वाले (दोषाम्) रात्रि और (उषासम्) दिन की (ईमहे) याचना करते हैं वैसे इनकी आप लोग भी याचना करो।

भावार्थ-विवाहित पति-पत्नी आपस में एक दूसरे का विश्वास करें। एक दूसरे के साथ सदैव सत्य ही बोले, एक दूसरे का आदर करे और जैसे रात्रि और दिन शांति पूर्वक साथ रहते हैं वैसे रहें। दोनों एक ही घर में शांति और प्रेम के साथ रहें।

इहेव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोद मानौ स्वेगृहे।
ऋ. 10.85.42

पति-पत्नी को परमात्मा आशीर्वाद देते हैं कि (इह एव स्तम्) तुम दोनों इस घर में ही निवास

करने वाले बनो। (मा वियौष्टम्) तुम कभी विलग मत होओ। तुम्हारा परस्पर का प्रेम सदा बना रहे। (विश्वं आयु:) पूर्ण जीवन को (व्यश्नुतम्) तुम प्राप्त करो। (पुत्रै:) पुत्रों के साथ (क्रीडन्तौ) खेलते हुए तुम (स्वे गृहे) अपने घर में (मोद मानौ) आनन्द पूर्वक निवास करो।

पति और पत्नी दोनों को कल्याणकारी मार्ग पर चल कर, समय का सदुपयोग करते हुए, नियमित जीवन व्यतीत करना है।

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्य्या चन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि॥

ऋ 5.61.15

हम लोग (सूर्य्याचन्द्रमाविव) सूर्य और चन्द्रमा के समान (स्वस्ति) सुख देने वाले (पंथान) मार्गो के (अनु चरेम) अनुयायी बनें। (पुन:) फिर (ददता) दान करने (अघ्नता) और नाश नहीं करने वाले (जानता) विद्वान् के साथ (सम् गमेमहि) मिलते रहें।

पत्नी का सबसे महत्वपूर्ण कार्य घर की अच्छी व्यवस्था करना है।

आशसनं विशसनमथो अधिविकर्तनम्।
सूर्याया: पश्य रूपाणि तानि ब्रह्मा तु शुन्धति॥

ऋ 10.85.35

(आशसनम्) घर में चारों ओर शासन अर्थात् घर के सब व्यक्तियों से गृह कार्यो को ठीक ढंग से कराना (विशसनम्) घर में उत्कृष्ट इच्छाओं से घर को उन्नत करने का ध्यान रखना (अथो) और (अधि विकर्तनम्) कपड़ों को विविध रूपों में काटने आदि का काम करना (सूर्याया:) सूर्या के (रूपाणि) इन रूपों को (पश्य) देखिए।

पति और पत्नी को आपस में एक दूसरे से भय रहित होना चाहिए।

आ ग्रावभिर हन्येभिरक्तुभिर्व रिष्ठं वज्रमा जिघर्त्ति मायिनि।
शतंवा यस्य प्रचरन्त्स्वे दमे संवर्त्तयन्तो विच वर्तयन्नहा।

ऋ. 5.48.3

भावार्थ:- यदि पति और पत्नी आपस में भय रहित होवें तो सूर्य और विद्युत के समान दिन-रात पुरुषार्थ करके ऐवर्श्य से प्रकाशित होवें।

पति और पत्नी को एक दूसरे के अनुकूल आचरण करना चाहिए।

सा वह योक्षभिरवातोषो वरं बहसि जोषमनु।
त्वं दिवो दुहितर्या ह देवी पूर्व हूतौ मंहना दर्शाताभु:॥

ऋ 6.64.5

इसके भावार्थ में स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं-जैसे उषा रात्रि के अनुकूल वर्तमान नियम से अपने काम को करती है वैसे ही स्त्री अपने घर के कामों को करे तथा ब्रह्मचर्य के अनन्तर अपने मन के प्यारे पति को विवाह कर प्रसन्न होती हुई पति को निरन्तर प्रसन्न करे और ऐसे ही पति भी उस अनुकूल आचरण करने वाली को सदैव आनन्दित करे।

परिवार में किस स्त्री का सम्मान होता है इस पर कहा गया है-

उत त्वा स्त्री शशीयसी पुंसो भवति वस्यसी।
अदेवत्रादराधस:॥ ऋ. 5.61.6

अर्थ:- हे पुरुष जो (स्त्री) स्त्री (अदेवत्रात्)विद्वानों की रक्षा करती है जिससे उसके विरूद्ध (अराधस:) धन विरूद्ध पदार्थ से पृथक् होकर (पुंस:) पुरुष की (वस्यसी) अत्यन्त दु:ख को दूर करने वाली (भवति) होती है और (त्वा) आपको सुखी करती है उसको आप भी सुख युक्त करो।

वह स्त्री परिवार का कल्याण करने वाली होती है जो अपने पति को बुरे आचरण से अलग कर देती है।

वि या जानाति जसुरिं वि तृष्यन्तं वि कामिनम्।
देवत्रा कृणुते मन:॥ ऋ 5.61.7

हे मनुष्यों। (या) जो (जसुरिम्) प्रयत्न करते हुए को (वि) विशेष करके (जानाति) जानती है। (तृष्यन्तम् प्यास से व्याकुल हुए के समान को (वि) विशेष करके जानती है और (कमिनम्) कामातुर पुरुष को (वि) विशेष करके जानती है वह (देवत्रा) विद्वानों में (मन:) चित्त (कृणुते) करती है। परिवार के सुख में स्त्री का बड़ा योगदान होता है।

एतं मे स्तोमभूम्ये दार्भ्याय परा वह।
गिरो देवी स्थीरिव॥ ऋ 5.61.17

भावार्थ:- जैसे प्राणियों के सुख के लिए रात्रि

होती है वैसे ही पति आदि के लिए श्रेष्ठ स्त्री होती है। पति को परिवार को पोषण करने वाला तथा पत्नी को मंगलमय स्वभाव वाली होना चाहिए।

तां पूषञ्छिवतमामेर यस्व स्यां/मनुष्या 3 वपन्ति।
या न ऊरु उश ती विश्रयाते
यस्यामुशान्तः प्रहराम शेषम्।।

ऋ. 10.85.37

हे (पूषन्) परिवार का समुचित पोषण करने वाले युवक। तू (तां शिवतमाम्) उस अत्यन्त मंगलमय स्वभाव वाली पत्नी को (एरयस्व) प्रेरित करने वाला बन। पति उत्तम संतान की प्राप्ति के लिए पत्नी को प्रेरित करे। (यस्याम्) जिसमें (मनुष्याः) विचारशील पति (बीजम्) शक्ति को (वपन्ति) स्थापित करते हैं। पत्नी वही ठीक है (यः) जो (उशती) उत्तम संतान की कामना वाली होती हुई (नः) हमारे लिए (उरु विश्रयाते) उरुओं को खोलने वाली होती है। (यस्याम्) जिसमें पति भी (उशन्तः) उत्तम सन्तान की कामना वाला होते हुए ही (शेपं प्रहराम) भोग करता है।

स्त्री को पति कुल के साथ ही पितृकुल को भी सम्मान देना है।

ऐषु धा वीखद्यश उषो मधोनि सूरिषु।
ये नोराधस्याह्वया मधवानो अरासत सुजाते अश्रवसूनृते।।

ऋ. 5.79.6

हे (अश्वसूनृते) बड़े ज्ञानवाली (सुजाते) उत्तम विद्या से प्रकट हुई (मधोनि) प्रशंसित धन से युक्त और (उषः) प्रातः काल के समान वर्तमान उत्तम स्त्री तू (एषु) इन स्त्री पुरुषों और (सूरिषु) विद्वानों में (वीरक्त्) वीर जन विद्यमान जिसमें उस (यशः) वश को (आ) सब प्रकार से (धाः) धारण कर और (ये) जो (मद्यवानः) बहुत धनी लोग (नः) हम लोगों को (अह्या) बिना लज्जा से कहे गए (राधांसि) अन्नों को (अरासत) देवें उनका तू सत्कार कर।

स्त्री को ससुराल में उचित सम्मान दिया जाना चाहिए।

सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्रवां भव।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु।।

ऋ. 10.85.46

पत्नी को घर में आकर घर का समुचित प्रबन्ध करना होता है। वहां उसे परायापन अनुभव नहीं करने देना है। वहां तो वह (श्वशुरे) ससुर में (सम्राज्ञी भव) प्रीति के करके (सम्राज्ञी) चक्रवर्ती राजा की रानी के समान प्रवृत्त (भव) हो। (श्वश्वा) अपनी सास के साथ प्रेम युक्त होकर उसकी आज्ञा में (सम्राज्ञी) रानी के समान (भव) रहा कर। (ननान्दरि) जो तेरी ननद है उसमें भी (सम्राज्ञी) प्रीति से प्रकाशमान (भव) हो। जो तेरा (देवृषु) देवर है उसके साथ भी (सम्राज्ञी) प्रीति से सम्राज्ञी के समान (भव) हो। अब एक मन्त्र और देकर विषय को विराम देते हैं।

अचेति दिवो दुहिता मधोनी
विश्वे पश्यन्त्युषसं विभातीम्।
आस्थाद्रथे स्वध्या युज्यमानभायमश्वासः
सुयुजो वहन्ति।।

ऋ. 7.82.4

भावार्थः- कान्तिमति स्त्री अपने विद्वान् पति के प्रति अनुराग वाली होकर रहे। पति-पत्नी दोनों एक दूसरे के प्रति समर्पण भाव से रह कर सुखमय जीवन व्यतीत करें। इससे विद्वानों में इनकी प्रशंसा होगी। इतिशम्।

दो बातें याद रखो दो भुला दो

याद रखने की बातें:

(1) मौत को याद रखो। इससे काम व मोह न रहेगा। **(2)** अपने प्रभु को याद रखो। इससे कभी लोभ न आयेगा और तुम किसी से छल, कपट, धोखा, फरेब, लालच व स्वार्थ न करोगे।

भुलाने की बातें:

(1) जिसने तुम्हारे साथ अभी तक की आयु में कोई भी बुराई की है, उसे भूल जाओ। इससे कभी क्रोध व द्वेष न जगेगा। **(2)** तुमने अब तक की आयु में किसी से जो बड़ी या छोटी नेकी की हो, उसे भूल जाओ। इससे अहंकार न आयेगा।

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ़, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
42. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
43. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
44. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
45. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
46. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
47. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
48. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
49. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
50. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
51. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
52. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
53. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
54. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
55. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
56. यज्ञ समिति झज्जर
57. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
58. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
59. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
60. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
61. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
62. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
63. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
64. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
65. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
66. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
67. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
68. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
69. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी. एल.एफ-2, गुड़गांव
70. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
71. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
72. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़

नीम एक-गुण अनेक

मच्छरों की मार से सारी दुनिया परेशान है। यहां तक कि बड़े-बड़े योद्धाओं को भी यदि मच्छर काट ले तो वे भी असहाय और निर्बल प्राणियों की श्रेणी में अपने आपको खड़ा पाते हैं। मच्छरों से मुकाबला करने के लिए दूसरी तरफ लोगों की जेबे लूटने वाली व्यापारिक कम्पनियों ने रसायनों से बनी अगरबत्तियां, बिजली के कई उपकरण जैसे गुड नाईट आदि तथा त्वचा पर लगाने वाली क्रीम, जैसे ओडोमॉस आदि का निर्माण करके जनता की जेबों से व्यापार करना शुरु कर दिया। इन उपायों से कुछ हद तक मच्छरों का इलाज बेशक होता हो परन्तु इनका मानवीय शरीर पर भी बड़ा भारी कुप्रभाव पड़ता है। मच्छरों से लड़ने के लिए नीम का तेल एक विशुद्ध प्राचीन भारत की औषधि है। नीम के पत्तों को चबाकर खाना या नीम के तेल की रात को सोते समय हाथों पैरों पर मालिश तथा मुंह पर भी पांच दस बार फेरना प्रमुख एवं कारगर उपाय है, जिससे केवल मच्छर ही नहीं भागेंगे अपितु वायरल जैसे बुखारों की बीमारियां तथा ब्लड शुगर आदि की अधिकता से भी सारी उम्र के लिए छुटकारा मिल जायेगा।

नीम के तेल के घरेलू उपयोग

1. सुन्न शरीर में प्राण फूंकने की नीम में पर्याप्त क्षमता है। तेल की शरीर के सुन्न अंग पर मालिश करने से डेढ़ दो सप्ताह में ही रक्त संचार सुचारु हो जायेगा।
2. आग से जले पर नीम का तेल बड़ा लाभदायक है। घाव हो जाने पर आधा भाग मोम मिलाकर मल्हम बनाकर घाव पर लगाने से घाव जल्दी भरता है।
3. दाद, खाज व खुजली में नीम के तेल का उपयोग लाभदायक है। बवासीर में गुदा पर लगाने से आराम मिलता है।
4. नीम के तेल में शहद मिलाकर रूई की बत्ती कान में फेरने से कान बहना बन्द हो जाता है तथा दुर्गन्ध भी नहीं रहती।
5. नीम का तेल नियमित रूप से सिर में लगाने से गंजापन दूर होता है तथा बाल झड़ने बन्द हो जाते हैं। इस प्रयोग में शीतल जल से सिर धोना चाहिए।
6. गठिया हो जाने पर नीम तेल की पीड़ित स्थान पर मालिश करें।
7. चेचक रोग में नीम का तेल लगाने से दाग नहीं रहते।
8. जुएं व लीक हो जाने पर नीम का तेल लगावें, नष्ट हो जायेंगी।
9. कुष्ठ रोग व सफेद दाग में नीम का तेल रोग ग्रस्त स्थान पर लगावें। त्वचा रोग दूर हो जायेगा।
10. नासूर में 100 ग्राम नीम तेल में 10 ग्राम मोम व 10 ग्राम बीरोजा मिला कर मल्हम बनाकर दोनों समय लगावें।
11. हड्डियों का अल्सर नीम तेल लगाने से ठीक होता है।
12. गिरने से भीतरी चोट व मोच के कारण सूजन आ गई हो तो नीम तेल चुपड़कर गर्म सिकाई करें।
13. दुधारु पशुओं को लगाने से उनके थनों पर चिचड़े आदि कृमियों से रक्षा होती है।
14. बालों का झड़ना व अन्य बालों के रोग शुद्ध भ्रंगराज तेल में 30 प्रतिशत नीम तेल मिलाकर लगाने से सिर में होने वाली अनेक व्याधियों को दूर करता ही है तथा बालों का झड़ना, असमय सफेद होना रोकता है तथा झड़े हुए बाल तो पुनः आते ही हैं, सफेद बाल भी काले हो जाते हैं। नेत्र ज्योति तेज हो जाती है।
15. दांत में खून आने व पायरीया में नीम तेल दांतों पर अंगुली से लगावें बाद मे दंत मंजन से मुंह साफ करने से खूनी पायरीया व दांत दर्द में आराम मिलता है।
16. बर्र एवं मधुमक्खी के काटने पर नीम तेल लगावें जलन नहीं रहेंगी।

प्रत्येक को अपनी उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

सामाजिक क्रान्ति के लिए ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें।

-विक्रमदेव शास्त्री

बाल संदेश

- स्वामी विवेकानन्द जी

- स्वास्थ्य और दीर्घ आयु की प्राप्ति के लिए सूर्यादय से पहले उठ जाना चाहिए।
- मंजन करके शौच (मल त्याग) से पहले पर्याप्त जल पीना (उष: पान करना) चाहिए।
- प्रात: काल सूर्य उदय के पहले और सायंकाल मल-त्याग (शौच) करना स्वास्थ्यप्रद होता है।
- साफ-सुथरे, सुन्दर स्थान पर सुबह घूमना (भ्रमण) आयु, बल और स्वास्थ्य को बढ़ाता है।
- प्रतिदिन सूर्यादय के पूर्व स्नान करना शारीरिक बल, स्वास्थ्य, आयु, स्वच्छता, फुर्ति और शांति को बढ़ाता है।
- प्रतिदिन शुद्ध शांत स्थान में सन्ध्या (ईश्वर का ध्यान) करने से मन की पवित्रता, शांति, एकाग्रता, बुद्धि और यश की वृद्धि होती है।
- विधिपूर्वक प्राणायाम करने से शरीर का विकास, मन की एकाग्रता, रक्त की शुद्धि होती है और इन्द्रियों की चंचलता समाप्त होती है।
- व्यायाम करने से शरीर में हल्कापन, मजबूती, सुडोलता, कार्य करने का सामर्थ्य, पाचनशक्ति की वृद्धि, शारीरिक बाधाओं को सहन करने की शक्ति, कांति और स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है।
- तम्बाकू, गुटखा, शराब, सिगरेट, बीड़ी, चाय, कॉफी, मांस, मछली, अण्डे, मिर्च, कोल्ड्रिंक का सेवन शारीरिक-मानसिक शक्ति को क्षीण करता है।
- अपनी योग्यता के अनुरूप अपनी पढ़ाई के साथ-साथ प्रामाणिक धार्मिक ग्रंथों जैसे, वेद, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, सत्यार्थ प्रकाश आदि का स्वाध्याय प्रतिदिन कर अपने ज्ञान में वृद्धि करनी चाहिए।
- सिगरेट, शराब आदि दुर्व्यसनों में फसकर छूटने के लिए वैसे ही तड़ते हैं, जैसे रोटी खाने के लोभ में पिंजरे में फंसकर चूहा, छूटने के लिए तड़पता है।
- जैसे मछली आटा खाने के लोभ में, कांटे में फंस जाती है, वैसे ही कोई भी व्यक्ति रूप, रस, गंध आदि विषयों में फंस जाता है। विषयों के आकर्षण से बचें।
- सात्विक भोजन भी थोड़ी मात्रा में करना चाहिए। ठूंस-ठूंस के खाने से आलस्य आता है, आयु घटती है, मोटापा बढ़ता है।
- जब भूख लगी हो और भोजन का समय हो गया, तब सात्विक भोजन करें। हर समय बकरी की तरह मुंह चलाते रहना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।
- भोजन को खूब चबा-चबा कर खाना चाहिए ताकि पेट को उसे पचाने के लिए कम से कम मेहनत करनी पड़े।
- भोजन के बाद कुल्ला करके मुंह को अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिए, इससे दांत खराब नहीं होते और मुंह से बदबू नहीं आती।
- बुरे बालक की पहचान-बात बात में गुस्सा करना, झूठ बोलना, माता-पिता, गुरुजनों के अनुशासन में न रहना, गुटखा मसाला खाते रहना, चाल-ढाल पहनावा बदमाशों की तरह रखना।
- अच्छे बालक की पहचान-नजर नीची रखना, मीठा बोलना, सभ्यता से बोलना, सत्य बोलना, बड़ो का आदर करना, अनुशासन में रहना, साफ सुथरा रहना आदि।
- बचपन से ही बच्चे यदि भौतिक सुविधाओं, नौकरों आदि का अधिक प्रयोग करेंगे, तो निश्चित रूप से उनकी शक्ति घट जायेगी। अपने को स्वावलंबी बनायें।
- बाल्यावस्था में लापरवाही करने से चरित्र सदा के लिए अशुद्ध हो जाता है। उसे वापिस ठीक करना बहुत ही कठिन होता है।
- बालकों को चाहिए कि वे अपने चरित्र को शुद्ध और उत्तम बनाने के लिए अपने माता पिता और गुरुजनों के निर्देश का श्रद्धापूर्वक पालन करें।
- उन बच्चों की शक्ति बढ़ती है, जो बच्चे मेहनती होते हैं। जैसे बाग-बगीचे में खुला स्वतन्त्र उड़ने वाला तोता।
- उन बच्चों की शक्ति घट जाती है, जो आलसी

होते हैं। जैसे पिंजरे में कैद तोता। स्वयं को आलस्य आदि दोषों से बचायें।

- ❑ दूसरों से चीजें न मांगे, अपनी चीजों का ही प्रयोग करें। यदि कभी आपत्तिकाल में मांगनी भी पड़ जाये, तो वस्तु को तोड़फोड़ या बिगाड़कर वापिस न देवें।
- ❑ कुछ शिष्टाचार की बातें-छड़ी या छत्री हिलाते हुए सड़क पर चलना अच्छा नहीं है। चलते-चलते बीच सड़क में ही खड़े होकर बातें करना अच्छा नहीं है।
- ❑ यदि कोई कहे, कि इस पृथ्वी ने कुछ चाल तेज कर दी, और सूर्य चक्कर 320 दिन में ही पूरा हो गया तो आप उसे मूर्ख कहेंगे। इससे सिद्ध हुआ, कि स्कूल में बच्चे सत्य की खोज करने जाते हैं, नौकरी ढूंढने नहीं।
- ❑ जिधर चलें, उधर ही देखें। बिना कारण बार बार दायें-बायें देखने से किसी दूसरे व्यक्ति या किसी मोटर गाड़ी से टकरा सकते हैं।
- ❑ स्कूल में विद्या पढ़ने का मुख्य उद्देश्य धन कमाना, सत्ता प्राप्त करना, मौज मस्ती करना आदि नहीं होना चाहिए। बल्कि ज्ञान की वृद्धि करके, दु:ख दूर करना तथा आनन्द की प्राप्ति करना होना चाहिए।
- ❑ बचपन से दूसरों की गालियां सुनते-सुनते, गाली देने की आदत बन सकती है। इसीलिए बोलने में सदा सावधान रहें, और अच्छे शब्दों का ही प्रयोग करें।
- ❑ विद्यालय में केवल अक्षर ज्ञान प्राप्त करने के लिए न जायें। सच्ची विद्या की प्राप्ति और चरित्र सुधार के लिए जायें।
- ❑ विद्यार्थी लोग मन की एकाग्रता और इन्द्रियों पर संयम रखें, तभी सच्ची विद्या की प्राप्ति और चरित्र की उन्नति कर पाएंगे। सिर्फ खाने-पीने में ही रूचि न रखें।
- ❑ जो बच्चे आधा घंटा पहले घर से भरपेट भोजन करके चले थे, और स्कूल आते ही मिठाई खाने लगे, वे उत्तम चरित्रवान और संयमी कैसे कहलाएंगे।
- ❑ सुबह उठकर और रात को सोने से पहले हर रोज अपने माता-पिता को पांव छूकर नमस्ते किया करें।
- ❑ स्कूल केवल विद्याप्राप्ति का ही स्थान नहीं है, बल्कि तपस्या का भी स्थान है। अपनी फालतू इच्छाओं का दमन करना बड़ी भारी तपस्या है।
- ❑ माता-पिता के साथ बोलते समय सभ्यता पूर्वक बोलें। उनके साथ तू या तुम शब्द से बात न करें, बल्कि आप शब्द से बात करें।
- ❑ स्कूल में किसी बच्चे की वस्तु-पैन, रबड़, पुस्तक आदि यदि कहीं पर गिरी हुई मिल जाये, तो उसे स्कूल के कार्यालय में जमा करा देवें।
- ❑ दूसरों के साथ सम्मान पूर्वक व्यवहार करें, किसी का मजाक न उड़ायें। अपना व्यवहार सुन्दर बनायें।
- ❑ आत्म गौरव बनाये रखें, भिखारियों जैसे वर्ताव न करें। परन्तु किसी के साथ बिना कारण घृणा या हीनता का व्यवहार भी न करें।
- ❑ माता-पिता का सच्चा सम्मान तो तब कर पाएंगे, जब आप अपने माता-पिता को दु:खी नहीं करें। नमस्ते आदि तो सम्मान के बाह्य चिन्ह हैं।
- ❑ अपनी पुस्तकें फाड़ देना, या पैन, पैंसिल खो देना, यह अपने माता-पिता के साथ अन्याय है। क्योंकि कितनी मेहनत से धन कमाकर वे आप को पढ़ाते हैं।
- ❑ माता-पिता की आय कम है, स्कूलों का खर्च बढ़ता जाता है। बच्चे लापरवाही से वस्तुएं नष्ट करके माता-पिता का खर्च न बढ़ायें।
- ❑ जो व्यक्ति नियमित जीवन जीता है, वह स्वस्थ होकर लम्बी उम्र तक जीता है। उसका सोना, जागना, व्यायाम, उपासना, भोजन आदि सारे काम स्वाभाविक रूप से समय पर होने लगते हैं।
- ❑ स्वास्थ्य की रक्षा और पूरी शक्ति प्राप्त करने के लिए कम से कम एक दिन में छ: सात घंटे सोना चाहिए। रात को जल्दी 10 बजे सोयें और सुबह जल्दी 4-5 बजे उठें।
- ❑ किसी काम को यदि आज ही कर सकते हों, तो उसे कल पर मत टालिए।

त्याग व सेवा की मूरत

– श्रीमती सुदेश सन्दुजा धर्मपुरा, बहादुरगढ़

माता शब्द का अर्थ दैहिक नारी तक निमित नहीं। जो भी माता जैसे गुण दिखाए, उसे माता माना जानें लगता है जैसे कि धरती-माता, गौ-माता, भारत-माता, लक्ष्मी-माता, गंगा-माता आदि। दुनिया में लेन-देन का हिसाब रखा जाता है परन्तु माता से सब-कुछ बेहिसाब मिलता है। मां अपने दिए दूध का, गोद में पालने का, सन्तान के प्रति किये गये त्याग व सेवा की कमी हिसाब नहीं रखती। अत: हर मनुष्य के लिए उसकी माता प्रथम पूजनीय वंदनीय देवी है। स्वामी दयानन्द के अनुसार पूजा के योग्य सबसे प्रथम देवता माता है। पुत्रों को चाहिए कि माता की टहल सेवा तन-मन-धन से करें। उसे सब तरह से प्रसन्न करें। उसका अपमान कभी न करें। बच्चे में पूर्वजन्म के गलत संस्कार प्रत्यक्ष होने पर भी मां उससे नफरत न करके प्यार से संभालती संवारती है और यथा संभव सुधार करती है। एक कहानी है कि ईश्वर जब अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना मनुष्यात्मा को पृथ्वी पर जीवन जीने के लिए भेजने लगा तो उसने घबरा कर अपने परमपिता से पूछा कि इतने बड़े संसार में पहुंच कर मैं आपके बिना अपनी जरूरतों को कैसे पूरा करूंगी और कौन मेरी रक्षा करेगा। ईश्वर ने मुस्करा कर कहा घबराओ नहीं वहां दो फरिश्ते तुम्हारी देखभाल व रक्षा करेंगे। मुनष्यात्मा ने कहां कि मैं उन्हें कहां ढूढूंगी और कैस पहचानूंगी? ईश्वर ने कहा चिन्ता मत करो, वे स्वयं ही तुम्हारी सेवा में उपस्थित हो जाएंगे और उनमें से एक तुम्हारी ''मां'' कहलाएगी और दूसरा तुम्हारा ''पिता''। माता में क्षमाशीलता व मधुरता का विशेषगुण होता है। मां धुरी बन कर परिवार का भार अपने कंधे पर उठाती है। मां और गृहिणी वो कर्मचारी है जिनके कार्य समाप्त करने की कोई समय सीमा नहीं है। मां वह बैंक है जहां आप अपनी चिन्ता व दु:ख जमा करके उस पर खुशियों व बेफिक्री का ब्याज कमा सकते हैं मां वह अस्पताल है जहां आप बिना खर्च के नर्स, दवाईयां व शारीरिक उपचार प्राप्त करते हैं। मां वह सहेली है जो आपकी व्यक्तिगत बातों को गुप्त रखते हुए आपको सही सलाह देती है। मां वह वकील है जो आपकी गलतियों को समझ कर आपके पिता या विरोधी से आपकी सिफारिश करके मामले को समाप्त कराती है। माँ वह बीमा कम्पनी है जो आपके भविष्य की सुरक्षा का गुप्त बीमा करती है। चाहे भविष्य में आप पर आएं संकट को उसे अपने ऊपर लेना पड़े। मां वह पुजारिन है जो ईश्वर की अराधना करते हुए आपके सुख, सम्पन्नता व स्वास्थ्य की कामना करती है। मां एक ऐसा फरिश्ता है, जो संतान के लिए कुछ भी कर सकती है। संतान की कमजोरी पर यदि मां को फिकीर होता है तो उसकी कामयाबी पर मां को फखर भी होता है। संतान के प्रति वह यदि चिन्तित रहती है, तो उसके सुनहरे भविष्य के प्रति वह चिन्तन भी करती है। मां का जीवन तो मानों संतान की जीवन रूपी नाव की पतवार है परन्तु पार लगते ही संतान पतवार को पीछे छोड़ देती है। मां, पुत्र को बुढ़ापे की बैशाखी समझे या न समझे परन्तु पुत्र की कामयाबी मां की बैशाखी के सहारे ही होती है।

श्रद्धा

श्रद्धा का महत्व बहुत ही बताते हैं।
मंच से श्रद्धा का पाठ ही पढ़ते हैं।।

आदमी को दास बनाती है यह श्रद्धा।
बुद्धि को ही पंगू बनाती है यह श्रद्धा।
श्रद्धा से विवेक का जन्म नहीं होता।
बिना विवेक तो सही कर्म नहीं होता।।

श्रद्धा से कभी सत्य का ज्ञान नहीं होता।
विवेक बिन मानव का कल्याण नहीं होता।
जिज्ञासा जगाओ सबको विवेक सिखाओ।
व्यर्थ ही न तुम इस श्रद्धा के गीत गाओ।।

समाज की हर बुराई को ढोती है श्रद्धा।
पार नहीं किश्ती मंझधार में डुबोती है श्रद्धा।
श्रद्धा नहीं यह विवेक ही जीवन का सार है।
आजाद पार होगा, जो विवेक पे सवार है।।

– दर्शनलाल आजाद, पानीपत

हंसो और हंसाओं

– रवि शास्त्री

- **धर्मेन्द्र जितेन्द्र से**–हां भाई। सारे बड़े-बड़े त्यौहार मना लिये।
  जितेन्द्र–यार मुझे तो अपनी पत्नी से बड़ा कोई त्यौहार नहीं लगता।
  धर्मेन्द्र–क्यों! ऐसा कैसे?
  जितेन्द्र–मुझे तो उसे हर 24 दिन में मनाना पड़ता है।
- **नरेश सुरेश से**–सरकारी नौकरी पाया हुआ कुंआरा लड़का रिश्तेदारों के बीच ऐसे ही चमकता है जैसे आकाश में ध्रुव तारा।
  सुरेश–और बेरोजगार
  नरेश–भाई बाकि तो हम बेरोजगारो को ऐसे देखते हैं जैसे सीधे धारा 302 काट कर आ रहे हैं।
- **मास्टर**–मुहावरे का अर्थ बताओ 'सांप की दुम पर पैर रखना'।
  स्टेडेंट–पत्नी को मायके जाने से रोकना।
  मास्टर जी–समझ नही पा रहे हैं कि इतनी गहरी जानकारी इन्हें कैसे हुई।
- **बाप**–बेटा तुम्हारे रिजल्ट का क्या हुआ?
  बेटा–80 प्रतिशत आये है पापा
  बाप–पर मार्कशीट पर तो 40 प्रतिशत लिखा है।
  बेटा–बाकि के 40 प्रतिशत आधार कार्ड लिंक होने पर सीधे अकाऊन्ट में आयेंगे।
- **लड़का** फोन पर **अपने दोस्त** को- क्या वे कुत्ते के पिल्ले आया क्यो नहीं।
  जवाब आया–कुत्ते का पिल्ला नहाने गया है मैं कुत्ता बोल रहा हूँ।
  लड़का–सॉरी अंकल।

आर्य श्रेष्ठ पुरुष के गुण

– महेन्द्र प्रताप आर्य, 7/77 शिवाजी नगर, गुरुग्रमा

1. जो वेदों का अध्ययन करता है–कराता है श्रवण करता है कराता है।
2. जो प्रतिदिन यज्ञ करता है।
3. जो एक ईश्वर में विश्वास रखता है।
4. जो ईश्वर की आज्ञा का पालन करता है।
5. जो अतिथि विद्वानों का आदर मान सम्मान करता है।
6. जो अपने माता-पिता गुरुजन और बड़ों का हृदय से। मान सम्मान करता है और अनुजों से प्यार करता हैं।
7. जो असत्य से दूर और सत्य में विश्वास रखता है।
8. जो संयमी-उदार-त्यागी और दयावान होता है।
9. जो चरित्रवान-दानी-परोपकारी होता है।
10. जो धैर्यवान-निष्ठावान-सदाचारी धर्मात्मा होता है।
11. जो सात्विक अन्न ग्रहण करता है।
12. जो सभी पाप और भ्रष्ट कर्मो से दूर रहता है।
13. जो अपने वचनों का पालन करता है।
14. जो सारे कार्य विचारपूर्वक धर्मानुसार करता है।
15. जो क्षमाशील और मननशील होता है।
16. जो नारी जाति का सम्मान करता है।
17. जो अनुशासन प्रिय है।
18. जो दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझता है।
19. जो विपत्ती संकट में अधीर नहीं होता।
20. जो भ्रम करता है और प्रसन्न रहता है।
21. जो अपने देश से प्यार करता है और उन्नति में सहयोग करता है।

> प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
>
> – **ऋषि दयानन्द**

आत्मविश्वास

– नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

आत्मविश्वास मनुष्य जीवन में सफलता का प्रथम सोपान है। किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए सबसे पहले हमें आत्मविश्वास होना चाहिए कि हम इस कार्य को पूरा करने के लिए सक्षम हैं। इसलिए अपने स्वयं पर विश्वास जागृत करने के लिए हमें अपनी शक्तियों एवम् सीमाओं को जानने की आवश्यकता है। यदि हम अपनी शक्तियों को भली-भांति जान जायेंगे तो निश्चिय रूप से हमारे अंदर आत्मबल और आत्मविश्वास का संचार होगा, जो हमारे जीवन में सफलता का आधार बनेगा। अपनी शक्तियों को पहचानने के लिए हमें अपनी आत्मा को जानना होगा। हमारी आत्मा अजर, अमर, अविनाशी सदा रहने वाली है, इस शरीर के जन्म से पूर्व और मृत्यु के उपरांत भी मेरी इस आत्मा का अस्तित्व रहेगा। यह आत्मबोध निश्चित रूप से हमारे अंदर अतुल्य आत्मबल का संचार कर देता है। वैसे भी ऋग्वेद में **द्युमां असि क्रवुमा इन्द्रः धीरः।** 1.62.12 कहकर वेद ने अपनी शक्तियों को पहचानने का आदेश दिया है। ऐश्वर्यशाली आत्मा प्रकाशमान, क्रियावान और धीर है। जीवात्मा अपनी शक्तियों को पहचान मन, बुद्धि और इन्द्रियों की शक्ति से परिपूर्ण आत्मज्योति से चमकने वाला कर्मशील और धैर्यवान है। यदि हम अपनी इन शक्तियों को पहचान लें तो निश्चित रूप से हमारा आत्मश्विास बढ़ जायेगा।

वैसे भी ऋग्वेद में ही **अहमिन्द्रो न पराजिग्ये।** 10.48.5 कहकर वेद भगवान ने आत्मविश्वास जागृत करने का आदेश देते हुए कहा मनुष्य इन्द्र है, तू कभी हार नहीं सकता। आत्मविश्वास जागृत होने पर कोई भी कार्य असम्भव नहीं रहता। जब मनुष्य के हृदय में विश्वास हो जाता है कि ''मैं इस कार्य को पूर्ण कर लूंगा'' तब वह कभी परास्त नहीं हो सकता। आत्मविश्वासी कठिनाईयों से भागता नहीं अपितु धीरता पूर्वक उनका सामना करता है। पाश्चात्य विद्वान जार्ज बर्नाड शा ने तो यह कहा है कि कठिनाई और विरोध वह मिट्टी है जिसमें शौर्य और आत्मविश्वास का विकास होता है। इसे यदि दूसरे शब्दों में समझने का प्रयास करे तो आसानी से कह सकते हैं कि अपने काम में अटूट श्रद्धा से आत्मविश्वास का विकास होता है। हम जीवन में चाहे किसी पर कितना भी शक करें लेकिन कभी स्वयं अपने या अपनी शक्तियों पर शक ना करें। यदि हम गहराई से चिंतन करें तो पायेंगे कि आत्मविश्वास का अभाव ही अंधविश्वासों को जन्म देता है जो हमारे पतन का कारण बनता है। इसलिए वेद भगवान के आदेश **अपश्यं गोपाम्।** ऋग्वेद 2.177.32 का पालन करते हुए अपनी आत्मा का दर्शन करें अर्थात् अपनी आत्मशक्ति को पहचान कर आत्मबल जागृत करके आत्मविश्वासी बनें।

हम कभी भी यह ना सोचें कि मैं दीन हीन बेकार कमजोर हूं। हमें तो यह अनमोल तन परमपिता परमेश्वर ने अपनी न्याय व्यवस्था के अन्तर्गत हमारे पूर्व जन्मों के सद्कर्मो के फलस्वरूप प्रदान किया है। अपने शरीर के एक-एक अंग की अतुलनीय संरचना को पहचानें। ईश्वर प्रदत्त अनमोल तन को अपने अधीन रखकर अपने आत्मबल से ऐश्वर्य को प्राप्त करें। वेद भगवान ने भी कहा **अदीनाः स्याम शरदः शतम्।** यजुर्वेद 36/4 हम सौ वर्ष तक दीनता रहित होकर जीवन व्यतीत करें। इसके लिए हमें अपने मन से दीन भावनाओं को छोड़कर अपने जीवन में आत्मविश्वास की दिव्य और उच्च भावना को जागृत करना होगा। इससे हम जीवन के प्रत्येक कार्य में सफल हो सकते हैं। दरअसल आज हमारी स्थिति उस सिंह शावक सरीखी है जो भेड़ों के झुंड़ में रहकर अपनी पहचान शक्तियों को भूल चुका है। आवश्यकता है खुद को पहचान कर आत्मदर्शन द्वारा आत्मबल जागृत करते हुए आत्मविश्वासी होकर धैर्य एवं शौर्य से कर्म करके ऐश्वर्य पाने की।

– 602 जी.एच. 53, सैक्टर-20, पंचकूला,
मो. 09467608686

सोमनाथ जी का पृथिवी से ऊपर रहना एक मिथ्या चमत्कार

- श्रीमती सुशीला गुप्ता, रांची झारखण्ड

प्रश्नः- देखो! सोमनाथ जी पृथिवी से ऊपर रहता था और बड़ा चमत्कार था, क्या यह भी मिथ्या बात है?

उत्तर- हां मिथ्या है, क्योंकि वह लोहे की पोली मूर्ति थी। ऊपर नीचे चुम्बक पाषाण लगा रखें थे। उसके आकर्षण से वह मूर्ति अधर खड़ी थी। जब 'महमूद गजनवी' आकर लड़ा तब यह चमत्कारे हुआ कि उसका मन्दिर तोड़ा गया और पुजारी भक्तों की दुर्दशा हो गयी और लाखों फौज दस सहस्त्र फौज से भाग गई। जो पोप, पुजारी, पूजा, पुरश्चरण, स्तुति, प्रार्थना करते थे कि 'हे महादेव! इस म्लेच्छ को तू मार डाल, हमारी रक्षाकर'' और वे अपने चेले को समझाते थे ''कि आप निश्चिन्त रहिये। महादेव जी भैरव अथवा वीरभद्र को भेज देंगे। वे सबम्लेच्छों को मार डालेंगे वह अन्धाकर देंगे । अभी हमारा देवता प्रसिद्ध होता है। हनुमान, दुर्गा और भैरव ने स्वप्न दिया है कि हम सब काम कर देंगे।'' वे विचार भोले और क्षत्रिय पोपों के बहकाने से विश्वास में रहे।

कितने ही ज्योतिष्ञ पोपों ने कहा कि अभी तुम्हारी चढ़ाई का मुहूर्त नहीं है। एक ने आठवां चन्द्रमा बतलाया दूसरे ने योंगिनी सामने दिखलाई इत्यादि बहकावट में रहे।

जब म्लेच्छों की फौज ने आकर घेर लिया तब दुर्दशा से भागे। कितने ही पोप-पुजारी और उनके चेले पकड़े गये। पुजारियों ने यह भी हाथ जोड़ कहा कि तीन करोड़ रूपया ले लो, मन्दिर और मूर्ति मत तोड़ो। मुसलमानों ने कहा कि ''हम बुत्परस्त नहीं किन्तु 'बुतशिकन' अर्थात् मूर्ति पूजक नहीं किन्तु मूर्तिभज्जक हैं। जो कि झट मन्दिर तोड़ दिया। जब ऊपर की छत टूटी तब चुम्बक पाषाण पृथक होने से मूर्ति गिर पड़ी। जब मूर्ति तोड़ी तब सुनते है कि अट्ठारह करोड़ के रत्न निकले। जब पुजारी और पापों पर कोड़ा पड़े तब रोने लगे। कहा कि कोष बतलाओ। मार के मारे झट बतला दिया। तब सब कोष लूटमार कूट कर पोप और उनके चेलों को 'गुलाम' बिगोरी बना पिसना पिस वाया घास खुदवाया, मल मूत्रादि उठवाया और चना चने खाने को दियें।

हाय! क्यों पत्थर की पूजा कर सत्यानाश को प्राप्त हुए? क्यों परमेश्वर की भक्ति न की? जो म्लेच्छो के दांत तोड़ डालते। देखो! जितनी मूत्तियां है उतनी शूरवीरों की पूजा करते तो भी कितनी रक्षा होती? पुजारियों ने इनकी इतनी भक्ति पाषाणों की थी परन्तु मूर्ति एक भी इन (शत्रुओं) के शिर पर उड़के न लगी। जो किसी एक शूरवीर पुरुष की भी मूर्ति के सदृश सेवा करते तो वह अपने सेवकों को यथाशक्ति बचाता और उन शत्रुओं को मारता।

आशा और सफलता

- किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने की तरफ पहला कदम है कि आप उसके बारे में जागते हुए स्वप्न देखें। फिर उसकी प्राप्ति के लिए पूरी मेहनत करें।
- आशाएं कोई चमत्कार नहीं कर सकतीं, वे केवल हमारी शक्ति को बढ़ा सकती हैं, उस शक्ति से हम चमत्कारिक परिणाम ला सकते हैं।
- प्रश्न-सब कुछ खोने से ज्यादा बुरा क्या है?
  उत्तर-वो उम्मीद खो देना, जिससे हम सब कुछ वापस पा सकते हैं। उम्मीद बनाए रखें।
- प्रत्येक दिन आशाओं से आरंभ होता है और अनुभव से समाप्त होता है। कोई भी दिन बेकार नहीं है, ऐसा सोच कर प्रत्येक दिन का लाभ लें।
- या तो आशाएं कम करें और सच्चाई को स्वीकार करें। या आशाएं अधिक हों तो इनको सच्चाई में बदलें। केवल बातें करने से कुछ नहीं होगा। **-प्रस्तुति राकेश भार्गव**

हरियाणा स्थापना दिवस की 51वीं वर्षगांठ (1.11.2017)

यह देश का एक मात्र ऐसा राज्य है जहां दयानन्द जयन्ती पर राज्य स्तर पर सरकारी अवकाश होता है। इस राज्य में 25 आर्य समाज के गुरुकुल हैं। रोहतक में दयानन्द विश्वविद्यालय भी है। आर्य समाज का अच्छा प्रभाव है। इसी राज्य में ढोंगी बाबाओं के डेरे भी हैं। इनके अनुयायी भी अच्छी संख्या में हैं। 700 एकड़ भूमि में बना हुआ गुरमीत राम रहीम का सिरसा वाला डेरा सबसे बड़ा है इसकी शाखाएं विदेशों में भी हैं। भक्तों की संख्या 5 करोड़ तक बताई है। राम रहीम एय्याश और चरित्रहीन है। दो मुकदमों में 20 साल के कठोर कारावास की सजा और 15 लाख रूपए की राशि की सजा जुर्माने में हुई है। कुछ मुकदमे अभी चल रहे हैं। यदि आर्य समाज ज्यादा सक्रिय होता तो हरियाणा में ढोंगी बाबाओं के डेरे ही नहीं खुलते।

देवता स्वरूप भाई परमानन्द की 143वीं जयन्ती (4.11.2017)

आप भाई मतिदास के वंशज थे। आपने 1915 में अ.भा. हिन्दू महासभा बनवाई थी। आप के प्रयास से वीर सावरकर 1937 में हिन्दू महासभा में आए थे। आपने 1939 में हिन्दू महासभा भवन बनवाया था। आप नेशनल एसेम्बली के लिए अम्बाला से सांसद चुने गए थे।

आपके पुत्र डा. भाई महावीर 1951 में भारतीय जनसंघ के सचिव बने। आप दो बार राज्य सभा के सदस्य बने। आप म.प्र. के राज्य पाल भी रहे थे। मुरादाबाद के सतीश मदान् से आपने हिन्दू महासभा में चल रही गुटबाजी पर अपनी नाराजगी प्रकट करते हुए कहा कि हिन्दू महासभा में आक्रामक संघर्षशील कार्यकर्त्ताओं का घोर अभाव देखकर उन्हें दु:ख होता है। उन्होंने स्वीकार किया कि उन्हें जनसंघ-भाजपा में नहीं जाना चाहिए था बल्कि हिन्दू महासभा का ही कार्य करना चाहिए था।

–आई.डी.गुलाटी, बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश), मो. 08958778443

मेरे पिता

सबसे सुन्दर, सबसे अच्छे,
सबसे प्यार मेरे पिता।
इनसे बढ़कर कोई नहीं है,
सबसे न्यारे मेरे पिता।
मुझे खिलाकर गोद में अपनी,
पूरे लाड़ लड़ाए हैं।
पकड़कर उंगली मेरे पिता ने,
रखने कदम सिखाएं है।
झूठ, कपट नहीं पास है इनके,
जबां के कितने खरे पिता।
इनसे बढ़कर कोई नहीं है,
सबसे न्यारे मेरे पिता।
सबसे सुन्दर, सबसे अच्छे

मेरे जन्म पर माता-पिता तो,
बहुत ही खुशी मनाते हैं।
मेरे लाल तू जुग-जुग जियो,
आर्शीवाद लुटाते हैं।
वस्त्र करके दान साथ,
करते भण्डारे मेरे पिता।
इनसे बढ़कर कोई नहीं है,
सबसे न्यारे मेरे पिता।
सबसे सुन्दर, सबसे अच्छे

ऊंच नीच का तोड़कर बंधन,
सबको गले लगाया है।
साफ छवि के कारण सबने,
अपना इन्हें बनाया है।
निडर बनकर रहे सदा ये,
नहीं किसी से डरे पिता।
इनसे बढ़कर कोई नहीं है,
सबसे न्यारे मेरे पिता।
सबसे सुन्दर, सबसे अच्छे

- **नरसिंह सैनी**, वेदान्त नगर, बहादुरगढ़
मोबाइल-09034601586

समर्थ को भी है दोष गुसांई लोकोक्ति समर्थ को भी दोष गुसांई।

- राजेन्द्र प्रसाद आर्य, बहादुरगढ़

अर्थात् साम्र्थ्यवान् कुछ भी करता रहे-अपने स्वार्थ के लिए तो उसे दोष नहीं लगता यह लोकोक्ति यथोचित व्यवहारिक जीवन में अपनाने योग्य नहीं है, यदि अपना लिया गया तो जीवन में अनर्थ हो सकता है।

जिस प्रकार प्रभु द्वारा बनाई गई सृष्टि में प्रभु ने मानव कल्याणार्थ सभी वस्तुओं को मनुष्य को दिया है प्रत्युत्तर उससे कुछ नहीं लिया है। प्रभु जब सर्व समर्थ होकर कुछ नहीं चाहता और परमार्थ करता रहता है तब मनुष्य को भी समर्थ होकर अपनी साम्र्थ्यता का उपयोग परमार्थ हेतु करना चाहिए न कि स्वार्थ हेतु। यदि वह सभी कर्म स्वार्थ हेतू करता है तो उसे दोष लगता है जो कि प्रभु के सर्वमान्य। स्वतन्त्र परोपकार के सिद्धान्त का उल्लंघन करता है।

जैसे कोई किसी पर किए गए उपकार को नहीं मानता है तो वह कृत्घन। पापी कहलाता है वैसे ही समर्थ होकर वह स्वार्थ सिद्ध करता है तो वह पापी कहलाता है। अगर जान बूझकर गलती या अपराध करता है तो भारी दोष लगता है यदि अनजाने में करता है तो भी दोष लगता है, अनजाने में की गई गलती या अपराध करने पर कि वह आगे ऐसा नहीं करेगा और प्रायश्चित कर लेगा तो पुराने किए हुए पाप कर्म का फल भोग कर नवीन शुभ कर्म करेगा और निष्काम भावना से करेगा तो मुक्त हो जाएगा।

आज के दौर के अधिकतर बाबा जैसे आशा राम बापू, गुरमीत राम रहीम, आशुतोष महाराज समर्थ होकर भोली-भाली जनता को ठगते रहते हैं उनकी भावनाओं का शोषण करते रहते हैं और धर्म के नाम पर ठगते रहते हैं और उनको अभीष्ट लक्ष्य से भटका देते हैं। ये बाबा पहले तो धन और जवानी का मजा लेते है और बाद में सजा भुगतते है इस लोक में और परलोक में भी। दोनों बाबा धन के लोभी और बलात्कारी सिद्ध हुए एक 10 साल की तथा दूसरा 10 साल की सजा काट रहा है। वे इस पृथ्वी लोक पर तो सजा भुगत ही रहे हैं और परमेश्वर न्याय व्यवस्था से किऐ हुए कर्मो का फल जन्म-जन्मान्तर भुगतते रहेंगे। वस्तुत: हमें इस प्रकार के बाबाओं से बचना चाहिए इन्हें अपना गुरु नहीं बनाना चाहिए-वह परम पिता परमेश्वर गुरुओं का भी गुरु है जिसे योग दर्शन में ''तस्य वाचक: प्रणव।। ओ३म्-सर्वोच्चय और निज नाम कहा गया उसे ही जीवन में धारण करना चाहिए और नेक कर्म करने चाहिए।

जैसे एक सूक्ति में कहा गया है कि

''धनानि जीवनानि परमार्थी प्राज्ञः उत्सर्जेत
सन्मित्ते वरम् त्यागो विनाश तु नियति सति।।''

समर्थी और सज्जनों को चाहिए कि अपने धन और जीवन का प्रयोग सदुपयोग और श्रेष्ठ कार्यो में करें कालान्तर में धन और जीवन की नियति नष्ट होना ही है।

अत: हमें समर्थ होकर व्यवहारिक जीवन में परमार्थ ही करना चाहिए स्वार्थ नहीं क्यों कि मनुष्य जन्म बार-बार नहीं मिलता।

सारांश यही है कि यदि व्यक्ति समर्थ है तो भी उसकी समर्थता में प्रभु का हाथ है उसे प्रभु द्वारा दिए हुए जीवन को परमार्थ के कार्यो में लगाना चाहिए, स्वार्थ के कार्यो में नहीं।

समर्थ को भी है दोष गुसांई,
गांठ बांध लो यह बात मेरे भाई।
यह जन्म दोबारा नहीं मिलेगा,
कर लो नेक कमाई ओ मेरे भाई।।

प्रलय के समय समुद्र अपनी मर्यादा यानी तटों को छोड़ देता है, लेकिन सज्जन लोग विपत्ति आने पर मर्यादा को नहीं छोड़ते....

-चाणक्य

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

-ऋषि दयानन्द

सत्यार्थ प्रकाश का बार-बार अध्ययन जीवन पथ का मार्गदर्शनक एवं हितकारी

- मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश लिख कर सम्पूर्ण मानव जाति पर एक महान उपकार किया है। इस ग्रन्थ के प्रभाव से ही देश को स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, लाला लाजपत राय, महात्मा हंसराज, श्यामजी कृष्ण वर्म्मा, महादेव गोविन्द रानाडे, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, शहीद भगत सिंह आदि समाज सुधारक व बड़ी संख्या में देश भक्त मिले हैं। ऐसे ही कोटि कोटि लोग विगत 140 वर्षों में सत्यार्थप्रकाश से प्रभावित होकर देश व जाति के लिए लाभकारी सिद्ध हुए हैं। यहां हम पं. गुरूदत्त विद्यार्थी जी के जीवन का सत्यार्थ प्रकाश से जुड़ा एक प्रसंग प्रस्तुत कर रहे हैं। पं. गुरूदत्त विद्यार्थी लाहौर में संस्कृत व्याकरण ग्रन्थ अष्टाध्यायी पढ़ाते थे और कक्षा के विद्यार्थियों से कहते थे कि प्रात: व सन्ध्या के पश्चात् एक घण्टा तक सत्यार्थप्रकाश अवश्य पढ़ा करो। वे कहते थे कि मैंने ग्यारह बार सत्यार्थप्रकाश को ध्यान से पढ़ा है और जब-जब इस ग्रन्थ को उन्होंने पढ़ा, उन्हें इसके नये-नये अर्थ सूझे। वे कहा करते थे कि यह खेद की बात है कि सत्यार्थप्रकाश को लोग कई बार नहीं पढ़ते। एक बार प्राणायाम की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा था कि प्राणयाम असाध्य रोगों को भी दूर कर सकता है। उन्होंने बताया था कि कभी-कभी किसी स्थूलकाय व्यक्ति को यह प्राणयाम कुछ दुर्बल बना देता है परन्तु थोड़े समय के पश्चात् वह व्यक्ति सशक्त व स्वस्थ हो जाता है। उनका यह कथन था कि संसार में सबसे उपयोगी वस्तु नि:शुल्क मिला करती है। अत: भयंकर रोगों की सर्वोत्तम औषधि वायु है और यह वायु प्राणायाम द्वारा औषधि का काम दे सकती है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का निर्माण लोगों को वेदों व सत्य धर्म का परिचय देने के लिए प्रथम सन् 1874-75 में किया था। इस ग्रन्थ का संशोधित व परिवर्धित रूप उनकी सन् 1883 में मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ जिसका निरन्तर प्रकाशन व प्रचार हो रहा है। सत्यार्थ प्रकाश को वैदिक मान्यताओं का विषयानुसार वर्णन ग्रन्थ कह सकते हैं जो कि एक ग्रन्थ मात्र न होकर सत्य वैदिक मान्यताओं का प्रमुख व अन्यतम धर्मग्रन्थ है। इसमें तीन शाश्वत सत्ताओं ईश्वर, जीव व प्रकृति सहित मनुष्य के हर आयु के कर्तव्यों व सृष्टि उत्पत्ति से लेकर प्रलयावस्था तक तथा बन्धन-मोक्ष आदि अनेक विषयों का वर्णन है। हमने अनेक बार इस ग्रन्थ को पढ़ा है और इससे उत्पन्न ज्ञान व विवेक के आधार पर हम यह अनुभव करते हैं कि मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाने व संसार का यथार्थ परिचय कराने वाला इससे अधिक सरल व उपयोगी ग्रन्थ संसार में अन्य कोई नहीं है। यह अनुभव केवल हमारा ही नहीं है अपितु इसका अध्ययन करने वाले प्राय: सभी व अधिकांश लोगों का है जिसमें आर्यजगत के वरिष्ठ विद्वान पं. गुरूदत्त विद्यार्थी (1864-1890) भी सम्मिलित हैं। उनके जीवन का एक प्रेरणादायक प्रसंग ही लेख की भूमिका बना है। हम यहां यह भी कहना चाहिते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश में जो ज्ञानराशि है, उसका देश व मनुष्य जीवन के विभिन्न पहलुओं पर जो प्रभाव हुआ है उसका मूल्यांकन अभी तक नहीं हुआ है। यदि देखें तो सत्यार्थ प्रकाश ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रान्ति कर देश को उन्नति के पथ पर अग्रसर किया है।

इसी से मिलता-जुलता एक संस्मरण पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जी के अभिन्न मित्र लाला जीवनदास ने अन्यत्र भी उल्लेखित किया है जहां वह लिखते हैं कि ''जितना अधिक वे स्वामी दयानन्द की पुस्तकों का अध्ययन करते थे, महर्षि के प्रति उनकी भक्ति उतनी ही प्रगाढ़ और वैदिक धर्म में उनकी श्रद्धा उतनी ही सुख्रढ़ होती जाती थी। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश को कम से कम 18 बार पढ़ा था। वे कहते थे कि जितनी बार मैं इसे पढ़ता हूं, मुझे मन और आत्मा के लिए कुछ न कुछ नवीन भोजन मिलता है। उनका कथन है कि यह पुस्तक गूढ़ सच्चाइयों से भरी पड़ी है।

हमें पं. गुरूदत्त विद्यार्थी के मात्र 26 वर्ष से भी कुछ कम दिनों के अति व्यस्त जीवन में 18 बार सत्यार्थप्रकाश को पढ़ना किसी आश्चर्य से कम

दृष्टिगोचर नहीं होता। जिस व्यक्ति ने एम.ए. विज्ञान में स्वतन्त्रतापूर्व काल में अविभाजित पंजाब प्रान्त में सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया हो व अपने अध्ययन काल में ही अनेकानेक इतर विषयों का अध्ययन करता रहा हो, प्रवचन देता रहा हो, पत्रों का सम्पादन करता हो, आर्यसमाज के सत्संगों व उत्सवों में प्रवचन करता हो व डी.ए.वी. आन्दोलन के प्रचार के लिए देश भर में भ्रमण व अपीले करता रहा हो, उसका 26 वर्षों के अल्प जीवन काल में 18 बार सत्यार्थप्रकाश पढ़ना निःसन्देह आश्चर्यजनक है। सत्यार्थ प्रकाश का महत्व इसलिये भी है कि इसमें ईश्वर व धर्म सम्बन्धी अनेक यथार्थ तथ्यों का प्रतिपादन है जो समकालीन व इससे पूर्व के साहित्य में उपलब्ध नहीं होते। इसको इस रूप में भी समझ सकते हैं कि मनुष्य जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है? यह यथार्थ रूप में सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर ही हश्दयंगम होता है। सच्ची अंहिसा की शिक्षा इस ग्रन्थ को पढ़कर मिलती है। जीवन के उद्देश्य मोक्ष के अतिरिक्त मोक्ष प्राप्ति के साधनों को भी तर्क व युक्तियों के माध्यम से समझाया गया है जिसे सच्चे मन से अध्ययन करने वाला प्रत्येक पक्षपातरहित मनुष्य स्वीकार करता है। यह पुस्तक ऐसी है कि जिसके खण्डन में अभी तक कोई ग्रन्थ तैयार नहीं हुआ जबकि अन्य ग्रन्थों की मान्यताओं पर उसी मत के अनुयायियों में मतभेद पाये जाते हैं और कई मतों मजहबों में तो तर्क की इजाजत ही नहीं है। अतः सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से इसके अध्येता को जो लाभ प्राप्त होता है वह अन्य मत-मतान्तरों के अनुयायियों को प्राप्त नहीं होता।

पं. गुरूदत्त विद्यार्थी जी की सत्यार्थप्रकाश के प्रति जो टिप्पणी की गई है वह इस लिए भी महत्वपूर्ण है कि वह एक असाधारण व्यक्ति थे। हमारे देश में एक प्रकार से एक अन्धपरम्परा चलती रही है कि विदेशी विद्वान कुछ भी कहें, उसे प्रमाणित स्वीकार किया जाता है और अपने देश के चिन्तकों व विचारकों के सत्य विचारों को भी विदेशी विद्वानों के भ्रमोत्पादक दृष्टिकोण से ही देखा जाता है। गुरूदत्त जी ने इस परम्परा को स्वीकार न कर विदेशी विद्वानों के चिन्तन, मान्यताओं व निष्कर्षों पर आपत्तियां ही नहीं की अपितु उनके खण्डन में लेख व पुस्तकें लिखी जिससे वह निरूत्तर हो गये। आज भी उनके उपलब्ध साहित्य को पढ़ने पर उनकी विलक्षण बुद्धि से प्रस्फुटित विचारों को पढ़कर लाभ उठाया जा सकता है। उन्होंने अपने जीवन में वेद और वैदिक साहित्य के प्रचार में जो योगदान दिया है वह अविस्मरणीय है। उन्होंने वैदिक साहित्य को समृद्ध किया। विदेशी विद्वानों के मिथ्या दम्भ को चकनाचूर किया। वैदिक विचारों को अंग्रेजी भाषा में प्रस्तुत कर अंग्रेजी शिक्षित वर्ग में सबसे पहले प्रचारित व प्रकाशित किया। उन्होंने जीवन का एक-एक क्षण वेदों के प्रचार व प्रसार में व्यतीत किया। हम अनुमान करते हैं कि यदि उन्हें 60-70 वर्ष का जीवन मिला होता तो वह इतना कार्य करते कि जिसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। उन्होंने अपने जीवन में महर्षि दयानन्द का अनुकरण कर उनके जैसा बनने का प्रयास किया था। वह अधिक से अधिक जितना कर सकते थे उन्होंने किया। उन्होंने 26 वर्ष की आयु में जितना कार्य किया है, उनसे पूर्व शायद ही किसी वैदिक विद्वान व धर्म प्रचारक ने समस्त विष्व में किया होगा। हमारा यह भी अनुमान है कि यदि उन्हें 60 से 70 वर्ष का जीवन मिला होता तो वह 100 से अधिक बार सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करते और इससे उनके व्यक्तित्व में जो श्रेष्ठता व महानता उत्पन्न होती, उसका हम केवल अनुमान ही कर सकते हैं। अनुमान से वह आर्यसमाज व देष में दूसरे ऋषि हो सकते थे। उनके प्रेरक जीवन का अध्ययन युवा पीढ़ी के लिए आदर्श है। सभी को उनका जीवन चरित पढ़कर प्रेरणा लेनी चाहिये।

-196 चुक्खूवाला ब्लाक 2, देहरादून-248001
फोन-09412985121

सब धोखों में प्रथम और सबसे खराब अपने आप को धोखा देना है। इसके आगे सब पाप सरल हो जाते हैं।

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

– **ऋषि दयानन्द**

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी राष्ट्रीय अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी लाजपतनगर-2, नई दिल्ली	1,02,000/-
श्री अम्बरीश कु. जी झाम्ब हरीटेज सिटी गुरुग्राम, हरि.	25000/-
मा. सरूप सिंह जी आर्य सुपुत्र श्री थानेदार हुकुम सिंह जी छावला दिल्ली	21000/-
श्री अशोक कुमार जी गुप्ता (पूर्व चेयरमैन नगर परिषद अनाजमण्डी, बहादुरगढ़)	11000/-
आर्य समाज सी 3 ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली	11000/-
श्री सतीश जी खन्ना रोशन आरा रोड, दिल्ली	11000/-
श्री मांगेराम सांगवान सुपुत्र श्री महाराम जी सांगवान पटेल नगर, बहादुरगढ़	6000/-
श्री अशोक जून जी ट्रस्टी आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़	5111/-
श्री धर्मदेव जी खुराना जया अपार्टमेन्ट रोहिणी दिल्ली	5100/-
श्री महावीर सिंह जी (पूर्व तहसीलदार) हिसार हरियाणा	5100/-
श्रीमती साविता देवी पत्नी श्री हीरा लाल जी चावला पश्चिम विहार, नई दिल्ली	5100/-
श्री प्रकाश वीर जी आर्य मन्त्री, आर्य समाज झज्जर हरि.	5100/-
वानप्रस्थी पुरुषार्थ मुनि जी वैद्धिक वृद्धाश्रम, बहादुरगढ़	5000/-
आर्य समाज ए ब्लॉक जनकपुरी, दिल्ली	3600/-
श्री विकास जी बंसल रोहिणी दिल्ली	3100/-
श्री राजेश जी आर्य पश्चिम विहार दिल्ली	3100/-
श्रीमती सुदर्शनलता चौधरी स्व. चौ. चन्द्रभान स्मृति विकासपुरी दिल्ली	3100/-
श्री सिद्धान्त जी दलाल सैक्टर-6, बहादुरगढ़, हरि.	3000/-
श्री पार्थ सुपुत्र श्री जशवीर सिंह जी बहादुरगढ़	3000/-
आर्य केन्द्रीय आर्य सभा गुरुग्राम हरियाणा	2500/-
माता लक्ष्मी देवी कटारिया चैरीटेबल ट्रस्ट विकासकुंज विकासपुरी दिल्ली	2500/-
श्री दीपक कुमार जी निरोग कुंज सैक्टर-7, बहा.	2100/-
श्रीमती अग्रिम मल्होत्रा सैक्टर-4, द्वारका दिल्ली	2100/-
श्री अर्थव मल्होत्रा दिल्ली	2100/-
श्री दिवांश आर्य सु.श्री जगदीश शर्मा जी सै.-2,बहा.	2100/-
श्री धर्मबीर जी जून गुरु नानक कॉलोनी बहादुरगढ़	2100/-
श्री एम.एस.एम. पब्लिक स्कूल बामनौली, बहा., हरि.	2100/-
श्रीमती चन्द्र किरण सैक्टर-2, बहादुरगढ़ हरियाणा	2100/-
श्री जय प्रकाश जी राणा छवरा दिल्ली	2100/-
श्री बहादुरगढ़ पब्लिक कैरियर ट्रक यूनियन परनाला रोड, बहादुरगढ़	2100/-
श्री ललित जी चौधरी विकासपुरी, दिल्ली	2100/-
श्री महासिंह जी शर्मा सैक्टर-2, बहादुरगढ़, हरियाणा	2100/-
रती आर्य समाज शिवाजी नगर गुरुग्राम हरियाणा	2100/-
श्री जगवीर जी आर्य शाहाबाद दौलतपुर, दिल्ली	2000/-
श्री हरीश बजाज जी	1200/-
आर्य समाज नजफगढ़ नई दिल्ली	1100/-
श्रीमती सुमित्रा देवी पत्नी श्री लक्ष्मी नारायण जी काठमण्डी, बहादुरगढ़	1100/-
श्री मांगेराम जी सुपुत्र श्री महाराम जी खी राम जी पटेल नगर बहादुरगढ़	1100/-
श्री मंजीत सिंह आर्य दौलताबाद, गुरुग्राम, हरियाणा	1100/-
श्री मदनलाल जी रेलन गुरुग्राम, हरियाणा	1100/-
श्रीमती सुदेश कालड़ा पश्चिम विहार, दिल्ली	1100/-
श्री सुरेन्द्र जी दून सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती मायावती जी मदान धर्मपुरा बहादुरगढ़, हरि.	1100/-
श्री श्री मंजीत जी दलाल आर्य नगर, बहादुरगढ़	1100/-
श्री पं. जयभगवान जी आर्य झज्जर हरियाणा	1100/-
आर्य समाज झज्जर रोड, बहादुरगढ़	1100/-
आर्य समाज बाण्डा हेड़ी हिसार, हरियाणा	1100/-
श्री राजपाल जी आर्य आसौदा, हरियाणा	1100/-
श्री कर्मवीर जी राठी (पूर्व चेयरमैन नगर परिषद एवं जिला अध्यक्ष, एम.डी., बहादुरगढ़)	1100/-
केन्द्रिय आर्य युवक परिषद् दिल्ली	1100/-
श्री प्रवीण कुमार जी महावीर पार्क बहादुरगढ़, हरियाणा	1100/-
श्री सत्यवीर सिंह सुपुत्र श्री तेजराम जी आर्य नजफगढ़,दि.	1100/-
आर्य धर्मार्थ ट्रस्ट गुरुग्राम हरियाणा	1100/-
श्री गणेशदास गरिमा गोयल नया बाजार दिल्ली	1100/-
श्री कमल मलिक पत्नी श्री सुशील मलिक जी जनकपुरी, दिल्ली	1100/-
श्री ब्रह्मपाल, रविन्द्र, बेगराज फरीदाबाद हरियाणा	1100/-
श्री कृष्ण मदान जी (पम्मी) धर्मपुरा बहादुरगढ़	1100/-
श्री राधेश्याम जी शर्मा सैक्टर-6, बहादुरगढ़, हरि.	1100/-
श्री बसंतलाल जी आर्य कैथल हरियाणा	1100/-
श्री शहीद राज सिंह जी जून सु. श्री जय भगवान जी जून नेहरू पार्क, बहादुरगढ़	1100/-
श्री विजेन्द्र जी गिरधर पश्चिम विहार दिल्ली	1100/-
श्री श्री ओम अहलावत जी (अध्यक्ष किसान मोर्चा)झ.	1100/-
महिला पार्क समिति गुरुग्राम हरियाणा	1100/-
श्री रामशरण जी महेन्द्रगढ़ हरियाणा	1100/-
श्रीमती शकुन्तला देवी धर्म श्री राम किरण जी जिंदल सोहना हरियाणा	1100/-
श्रीमती रूक्मेश आर्या धर्म श्री सुकर्म पाल जी सांगवान सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती शास्त्री देवी कत्तरिया बहादुरगढ़	1100/-
श्री मा. ब्रह्मजीत जी आर्य प्रधान आर्य समाज सै.-6,बहा.	1100/-
श्री विश्वनाथ जी आर्य अग्रवाल कॉलोनी, बहादुरगढ़	1100/-
चिर. मनन सु. श्री सुरेश कुमार जी सैक्टर-6, बहा.	1100/-
श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जैन परिवार द्वारा अनाज मण्डी,बहा.	1100/-
श्रीमती रामदुलारी जी बंसल रोहिणी, दिल्ली	1000/-
श्री धर्मपाल जी एवं श्री संदीप जी सोनीपत हरियाणा	1000/-
डॉ. के एल सहगल रोहतक हरियाणा	1000/-
श्रीमती रामरती देवी भृगु नई बस्ती बहादुरगढ़	1000/-
श्री ललीत चौधरी द्वारा संग्रह विकासपुरी, दिल्ली	902/-
श्री भूपेन्द्र जी सवेरा प्रिटिंग प्रैस बहादुरगढ़	751/-
श्रीमती ललिता आर्या धर्म श्री जगदीश आर्य जी गुरुग्राम	600/-
श्री प्रदीप जी सुपुत्र श्री सुरेन्द्र जी गुमाना माजरी, झ.	570/-
श्रीमती अंगुरी देवी धर्मश्री रणवीर सिंह छिल्लर नेहरू पार्क, बराही रोड, बहादुरगढ़	550/-
श्री राजकरण जी आर्य बादली झज्जर हरियाणा	510/-
श्रीमती लक्ष्मी देवी जी नेहक पार्क, बहादुरगढ़	505/-

श्री ओमपाल जी चौधरी धनौरा टीकरी उत्तर प्रदेश	502/-
श्रीमती इन्दु कटारिया भाग्य विहार, दिल्ली	501/-
श्रीमती कांता कथूरिया आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़	501/-
श्री प्रदीप जी गुप्ता इन्द्रापुरम गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	501/-
श्री ओ.पी. सहरावत जी आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़	501/-
श्री सुधांशु जी आर्य सोलधा हरियाणा	501/-
श्री रामदास जी जांगिड़ धनौरा टीकरी उत्तर प्रदेश	501/-
श्री दर्शन मुनि जी आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़	500/-
श्री सुभाष चन्द्र स्वर्णकान्ता खन्ना महावीर नगर, दिल्ली	500/-
श्री संतलाल जी आर्य सैक्टर-6, बहादुरगढ़, हरियाणा	500/-
प्रिं. जयपाल जी दहिया सैक्टर-7, बहादुरगढ़	500/-
श्री अशोक नागिया जी पंजाबी बाग दिल्ली	500/-
मा. सत्यवीर जी फलसवाल भदानी झज्जर हरियाणा	500/-
श्री विश्वादेव जी लाम्बा पश्चिम विहार दिल्ली	500/-
श्री शैलेन्द्र श्याम सुन्दर जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री मा. रामफल जी जून प्रधान आर्य समाज झज्जर रोड	500/-
श्री पालेराम शर्मा (पूर्व पार्षद नगर परिषद लाईनपार बहादुरगढ़)	500/-
वैदिक सत्संग मण्डल समिति झज्जर हरियाणा	500/-
श्री रोहतास जी डागर महावीर पार्क बहादुरगढ़	500/-
श्री मोहर सिंह जी महमुदपुर फरीदाबाद हरियाणा	500/-
श्री सोमबीर जी नूना माजरा बहादुरगढ़ झज्जर हरियाणा	500/-
श्री सुरजभान जी शर्मा डावला झझर हरियाणा	500/-
श्री आयुष तहलान, नंगली रूकरावती नई दिल्ली	500/-
श्रीमती प्रेम छावड़ा जी पश्चिम विहार दिल्ली	500/-
श्रीमती वीरमती जी पत्नी श्री स्व. रामरतन जी सै.6, बहा.	500/-
श्री सत्यपाल जी आर्य (आर्य समाज हैल्पलाईन) महेन्द्रग्रढ़, हरियाणा	500/-
श्री वी.के सेठ रती आर्य समाज जनकपुरी दिल्ली	500/-
श्री मोहन माला जी रती आर्य समाज जनकपुरी दिल्ली	500/-
श्रीमती सुमन वर्मा जी रती आर्य समाज जनकपुरी दिल्ली	500/-
श्री मा. हरि सिंह जी दहिया बराही रोड, बहादुरगढ़, हरि.	500/-
श्री दुर्गा प्रसाद जी शर्मा (सेवा निवृत अध्यापक) रेवाड़ी हरियाणा	500/-
आर्य रविन्द्र जी गांव लाडपुर, दिल्ली	500/-
स्व. स्वामी महेन्द्रानन्द जी दलाल राम नगर, बहा.	500/-
श्री सतीश कुमाी जी सन्दुजा एवं श्रीमती सुदेश सन्दुजा जी रेलवे रोड़, बहादुरगढ़	500/-
श्री सूर्य प्रकाश सुपुत्री श्री ओम प्रकाश जी शास्त्री बिरहड़ झज्जर हरियाणा	500/-
श्री जगदीशार्य जी गुरुग्राम, हरियाणा	500/-
श्रीमती शशिकला जी पत्नी श्री हरीश कुमार गोमाना माजरी झज्जर हरियाणा	500/-
श्रीमती शकुंतला देवी जी मॉडल टाऊन बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती सरस्वती देवी पत्नी श्री तेजराम जी आर्य नजफगढ़	500/-
श्री जितेश शर्मा सु. श्री जितेन्द्र शर्मा गुरुनानक कॉलोनी नेहरू पार्क, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती राजेश्वरी जी जून गुरुग्राम हरियाणा	500/-
श्री तेजराम जी आर्य नजफगढ़ दिल्ली	500/-
श्रीमती निर्मला देवी धर्म स्व. श्री नत्थुराम जी शर्मा नेहरू पार्क, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती सुदेश चड्डा जी आर्य समाज ए ब्लॉक जनकपुरी	500/-
श्रीमती संतोष जी आर्य समाज ए ब्लॉक, जनकपुरी,दि.	500/-
श्री होशियार सिंह जी गुलिया तुड़ा मण्डी, बहा.	500/-
श्रीमती रमण नरूला जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री सतीश शर्मा जी ओमैक्स सिटी, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती सुमित्रा देवी धर्म श्री पदम्चन्द्र जी आर्य गुरुग्राम	500/-
श्री आनन्द पाल जी सुपुत्र श्री नोरंग सिंह टीकरी कलां दि.	500/-
श्री अभिषेक छिकारा धर्मविहार बहादुरगढ़	500/-
श्री मुकेश शर्मा पटेल नगर, बहादुरगढ़	500/-
शील चन्द जी एकोरेट फैक्ट्री गांव कसार, बहादुरगढ़	500/-

विविध वस्तुएं

श्री लक्ष्मी नारायण जी अड़ी चावल काठमण्डी बहादुरगढ़	एक समय का विशिष्ट भोजन
श्री जगदीश जी आर्य झज्जर	एक समय का विशिष्ट भोजन
सुदेश कुमार जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़ द्वारा	प्रात: एक समय का विशिष्ट भोजन

विविध वस्तुएं

श्रीमती पूनम देवी	रिफाईण्ड, आटा 10 किलो, चावल 5 किलो, दाल 2 किलो व बिस्कुट
श्री गुमान सिंह जी सेखावत, छिकारा कॉलोनी बहा.	40 जोड़े कपड़े

गौशाला

मा. संतोष कुमार जी आर्य चारे के लिए	5000/-
श्री मनीष टायर ट्रक मार्किट बहादुरगढ़ भूषा	17026/-
कुल आनन्द सैक्टर-6, बहादुरगढ़	5100/-
भुवनेश जी दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	1100/-

भोजन मध्य

श्रीमती विरमा देवी आजादपुर दिल्ली	3100/-
श्री नरेन्द्र सिंह हुड्डा देव नगर, झज्जर रोड, बहा.	2500/-
श्री डी.डी. बंसल जी अनाज मण्डी, बहादुरगढ़	3600/-
मा. संतोष कुमार जी	5000/-
स्व. श्रीमती बसन्त देवी संत कॉलोनी बहादुरगढ़	5000/-
कुमार आयस स्टोर नजफगढ़	6100/-

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 नवम्बर 2017 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक

नवम्बर 2017

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2015-17

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय

आत्मशुद्धि आश्रम में "वेणु आई इन्स्ट्यूट एण्ड रिसर्च सेन्ट्रल नई दिल्ली के नेत्र विशेषज्ञों, डॉक्टरों द्वारा परोपकार की भावना से सेवा कर रहा है, अधिक से अधिक संख्या में नेत्र रोगी पधार कर लाभ उठाएँ। निम्न सुविधाएं उपलब्ध हैं– केवल मात्र 20 रूपये की पर्ची से (1) सफेद मोतियाबिन्द की जांच व मोतिया बिन्द का लैंस प्रत्यारोपण के साथ ऑप्रेशन मुफ्त किये जाते है। (2) आँखों की समस्त बीमारियों की जांच। (3) आप्रेशन के लिए चयन किये गए नेत्र रोगियों को वेणु नेत्र अस्पताल दिल्ली ले जाया जाता है उन्हें तीसरे दिन वापिस लाया जाता है। नेत्र रोगियों से कोई पैसे नहीं लिये जाते हैं। (4) चश्में रियायती मूल्य पर दिये जाते हैं। नेत्र केन्द्र सोम से शनिवार तक प्रतिदिन प्रातः9 बजे से सायं 5 बजे तक खुलने का समय निश्चित है। नेत्र रोगियों को भेजकर पुण्य के भागी बनें। सम्पर्क करें–01276–239376